- 'उपनिवेश विरोधी' शब्द से आप क्या समझते हैं?
- नये मुक्त देश इन दो महाशक्तियों की स्पर्द्धा से किस प्रकार प्रभावित होंगे? अपने विचार बताइए।

प्रदान करने के अलावा कोई चारा नहीं था। पिछले अध्याय में आप इसके बारे में पढ़ चुके हैं। क्योंकि ये देश स्वतंत्र हो चुके थे, उन्हें पूँजीवाद और साम्यवाद के बीच, सं.रा.अ. और यू.एस.एस.आर. के बीच मतभेदों का सामना करना पड़ा - और उन्हें स्वयं के द्वारा बनाये गये विकास के रास्ते के बदले इन दोनों के बीच एक के चयन का निरंतर दबाव पड़ रहा था। उन्हें एक शक्ति के विरूद्ध दूसरे से सौदा करने का अवसर भी प्राप्त हुआ। इस खण्ड में हम इनमें से कुछ विषयों का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

संयुक्त राष्ट्र संघ (United Nations Organisation (UNO))

युद्ध समाप्त होने के बावजूद भी ब्रिटेन, फ्रांस, सं.रा.अ., यू.एस.एस.आर. और चीन जैसे मुख्य संयुक्त देशों ने सं.रा.सं. के निर्माण के लिए एक चार्टर की रूपरेखा तैयार की। इस चार्टर ने युद्ध रोकने और शांति बनाए रखने की आवश्यकता को ही महत्व नहीं दिया बल्कि मानव अधिकार, प्रजातंत्र और संसार के सभी लोगों के लिए भूख और गरीबी के अन्मूलन की आवश्यकता पर भी बल दिया। तब शांति बनाये रखने और मानव विकास, इन दोनों उद्देश्यों के साथ सं.रा. का आरंभ हुआ। ठीक उसी समय उसने राज्यों के स्वायत्त शासन को मान्यता प्रदान की और किसी भी देश के आंतरिक मामलों में तब तक हस्तक्षेप नहीं करने की प्रतिज्ञा की जब तक कि मानव अधिकार के उल्लंघन या विश्व शांति को नुकसान न पहुँचे।

स्थापना के समय 51 देश राष्ट्र संघ (UN) के सदस्य थे और आज (2016 में) 193 देश हैं। आने वाले दशकों में जैसे-जैसे देशों ने अपने आप को उपनिवेशी शक्तियों से स्वतंत्र किया वे सं.रा. में मिलते गए। संयुक्त राष्ट्र छः विभिन्न अंगों द्वारा कार्य करता है। हर एक अंग के कुछ विशिष्ट कार्य थे। जैसे :- शांति और सुरक्षा बनाये रखना, शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधाओं में सुधार करना, निर्धनता का उन्मूलन करना, अंतर्राष्ट्रीय अपराधों के संबंध में न्याय उपलब्ध करवाना आदि। इन कार्यों के लिए उत्तरदायी अंगों में हेग (Hague) में स्थित अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय, जिनेवा में स्थित विश्व स्वास्थ्य संगठन, पेरिस का संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन, न्यूयार्क का संयुक्त राष्ट्र बाल निधि कोष भी शामिल है।

चित्र 19.2 : संयुक्त राष्ट्र संघ का राष्ट्रीय चिह्न

संयुक्त राष्ट्र के मुख्य अधिकारी साधारण सचिव के चुनाव में सभी देश भाग लेते हैं और भिन्न-भिन्न महाद्वीपों के व्यक्ति इस पद पर नियुक्त होते हैं। साधारण सभा संयुक्त राष्ट्र संघ का मुख्य अंग हैं जहाँ देशों के बीच नियमित रूप से चर्चाएँ होती हैं। किंतु युद्ध और शांति से संबंधित निर्णय सुरक्षा परिषद् में लिये जातेहैं। इसमें पाँच देशों को विशेषाधिकार प्राप्त हैं। चीन, फ्रांस, इंग्लैण्ड (UK), USSR (रूस) और सं.रा.अ. (USA)। ये सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य हैं। परिषद् द्वारा लिये जाने वाले

निर्णयों पर इन देशों में कोई भी एक देश 'वीटो' (अवैध या अस्वीकृत) के प्रयोग द्वारा रोक लगा सकता है अधिकतर बड़ी शक्तियाँ स्वयं कई झगड़ों में लिप्त थीं, और UNO की कार्यवाही को रोकने के लिए अपनी वीटो शक्ति का उपयोग करती थीं। कभी कभी ये अपनी शक्ति का उपयोग UNO को अपने आदेश के आगे झुकाने के लिए भी करती थीं। लेकिन फिर भी UN जैसे संगठन के अस्तित्व ने बड़ी शक्तियों को संयम और आत्म-नियंत्रण के लिए विवश किया। इन विशेष शक्तियों ने बड़ी शक्तियों को विश्व शांति बनाये रखने का उत्तरदायित्व और विशेष भूमिका प्रदान की।

UN शिक्षा, स्वास्थ्य, सांस्कृतिक, आदान-प्रदान और विरासत की सुरक्षा के क्षेत्र में तो प्रशंसनीय कार्य कर रहा था, लेकिन वह युद्ध रोकने में अधिक सफल नहीं हुआ। वह हमेशा बड़ी शक्तियों की संसार पर नियंत्रण पाने की अभिलाषा को दबाता रहता था।

चित्र 19.3 : न्यूयार्क में UN का मुख्यालय

- क्या आप समझते हैं कि युद्ध देशों के मध्य गरीबी, समान विकास और सांस्कृतिक आदान-प्रदान से संबंधित हैं?
- कुछ लोगों के अनुसार पाँच शक्तियों को विशेष अधिकार दिया जाना अप्रजातांत्रिक है और इसे खत्म किया जाना चाहिए, जबकि कुछ लोगों के विचार में यदि इन शक्तियों के पास विशेष अधिकार नहीं होते तो UNO सुगमता से कार्य नहीं कर सकता था। चर्चा कीजिए।

दो कैंप और शीत युद्ध (1945-1991) (The Two Camps and the Cold War (1945-1991)

युद्ध के पश्चात दो महत्वपूर्ण विचारधाराओं और राजनैतिक समूहों का उद्भव हुआ। सोवियत रूस (USSR) के नेतृत्व में साम्यवादी धारा और USSR के नेतृत्व में प्रजातांत्रिक पूँजीवाद विचारधारा। एक ओर तो USSR समानता, राज्य नियंत्रित विकास और इन सिद्धांतों के आधार पर विरोधियों के दमन की भावना का प्रचार कर रहा था और दूसरी ओर USA बहुदलीय प्रजातंत्र और विकास की प्रक्रिया में निजी पूँजीवाद के नियंत्रण के विचारों का प्रचार कर रहा था। संपूर्ण पूर्वी यूरोप (पोलैण्ड, हँगरी, और पूर्वी जर्मन) USSR के प्रभाव में थे और चीन और वियनताम जैसे स्वतंत्रता प्राप्त करने वाले कई उपनिवेशों ने इससे समझौता कर लिया था। पश्चिमी यूरोप के देश जैसे :- ब्रिटेन,फ्रांस, स्पेन आदि ने USA से समझौता कर लिया था। अन्य सभी अंत:कालीन देशों को अपनी ओर खींचने के लिए इन दोनों विचारधाराओं में स्पर्धा थी ।

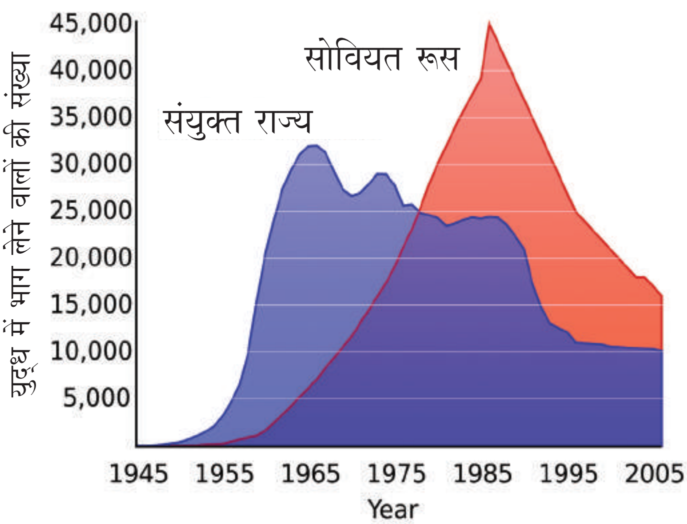

आरेख 1 : US और USSR का नाभीकिय भंडार

SCERT TELANGANA

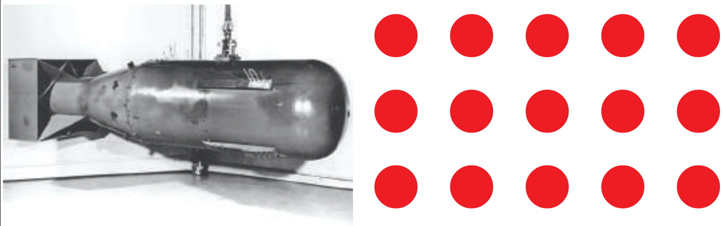

चित्र 19.4 : परमाणु बम की शक्ति को समझने के लिए आप इसे चलाने का प्रयत्न कर सकते हैं। हिरोशिमा पर गिराया गया परमाणु बम 15 किलो टन और नागासाकी पर गिराया गया बम 21 किलोटन का था। USSR का सबसे शक्तिशाली बम सार बॉम्बा (Tsar Bomba) 50,000 किलो टन का था। हिरोशिमा पर गिराये जाने वाले परमाणु बम को इस पुस्तक के पृष्ठ पर दर्शाने के लिए हमने जिस आकार का लाल बिंदु लिया है, वैसे ही USSR के बम को दर्शाने के लिए कितने आकार के बिंदु की ज़रूरत होगी? कल्पना कीजिए कि यदि (Tsar Bomba) का उपयोग होगा तो इसका कैसा प्रभाव पड़ेगा।

द्वितीय विश्व युद्ध के 45 वर्षों से अधिक समय के पश्चात इन दोनों विचारधाराओं के मध्य एक अजीब युद्ध हुआ। यह एक ऐसा युद्ध था जिसमें प्रतिस्पर्धी झगड़ा नहीं करते थे और इसीलिए वहाँ 'गर्म' युद्ध नहीं हुआ। इसके बदले पीठ पीछे शब्दों और प्रचार के माध्यम से युद्ध हुआ। इसे 'शीत युद्ध' कहा गया क्योंकि इसमें सामान्य युद्धों के समान लड़ाई नहीं की गई थी। सं.रा. (United States) और USSR के मध्य प्रबल तनाव के कारण यह शीत युद्ध हुआ, जिसका प्रभाव 1945 से 1991 के मध्य विश्व में होने वाली सभी घटनाओं पर पड़ा।

शीत युद्ध केवल प्रचार युद्ध नहीं था। यह एक सचमुच की लड़ाई भी थी जिसने लगभग 20 मिलियन लोगों की जान ली थी। लेकिन जितने भी लोगों की मृत्यु हुई वे सभी तीसरे विश्व के नागरिक थे अर्थात औपनिवेशिक प्रभाव के कारण उन्नत वियतनाम, कोरिया, अंगोला और अफगानिस्तान जैसे देश। इस विभाजन ने नैतिक रुप से समान लोगों और भौगोलिक रूप से समीपवर्ती क्षेत्रों को शत्रु बना दिया और इसके कारण इन देशों के मध्य निरर्थक युद्ध होने लगे।

शीत युद्ध के समय होने वाली कुछ मुख्य युक्तियाँ प्रतिनिधि युद्ध, सैन्य-संधि और हथियारों की होड़ थी।

प्रतिनिधि युद्ध (Proxy War) :-

आरंभ से ही दोनों देश स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले देशों को अपने प्रभाव में लाना चाहते थे। इसके कारण उन देशों के दो विरोधी दलों के समर्थन की आगवानी हुई। 1947 में टर्की और ग्रीस में US राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन ने पूँजीवाद-विरोधी दलों को सहायता प्रदान की। 1960 में अफ्रीका, काँगों में बेल्जियम राज्य को स्वतंत्र प्राप्त हुई। लेकिन US के गुप्तचर विभाग CIA के आदेशों से मुख्य साम्यवादी नेता पैट्रीस लुंबुंबा की हत्या कर दी गयी। नवंबर 1975 में एंगोला पुर्तगाल से स्वतंत्र हो गया। USSR और क्यूबा की सहायता से एंगोला के साम्यवादियों ने अधिकार अपने हाथ में ले लिये। लैटिन अमेरिका में अमरीकी सरकार के विरुद्ध फिडेल कैस्ट्रो के नेतृत्व में क्रांति की गयी और USSR की तरह समाजवाद के निर्माण का प्रयत्न किया। इससे लैटिन अमेरीकी देशों के लोग भी अपने देश में इसी प्रकार के परिवर्तन लाने का संघर्ष करने के लिए प्रोत्साहित हुए। उनके एक मुख्य नेता ची गुवेरा की हत्या हो गयी। यहाँ, तक कि समाजवादियों द्वारा चलायी जाने वाली चयनित सरकार जैसे :- एस एलैण्ड के द्वारा चलायी जाने वाली चिली की सरकार भी US के सैन्य अधिकारियों के निर्देश से गिरा दी गयी।

USSR भी अपने प्रभाव का विस्तार करने का प्रयत्न कर रहा था। 1950 से आरंभ करने पर उसे जर्मनी, हंगरी और चेकोस्लाविया जैसे देशों का विरोध सहना पड़ा। इसने अमैत्रीपूर्ण सरकार लाने के लिए सेना भेजी। 1960 के पश्चात् चीन ने स्वयं को USSR से अलग करने का निश्चय किया और USSR ने असफल रूप से चीन पर दबाव डालने का प्रयास किया। 1971 में USSR ने अपनी सरकार बनाने के लिए अफगानिस्तान पर कब्जा कर लिया। इसके बदले सं.रा. ने अफ़गान क्रांतिकारियों को जो कट्टर धार्मिक थे, सैन्य सहायता प्रदान की। एक लंबा नागरिक युद्ध हुआ और 1985 में USSR अफगानिस्तान से हट गया तथा अफगानिस्तान तालिबान के नेतृत्व में कट्टर धर्मावलंबियों के अधीन हो गया जो अब USA का विरोधी हो गया था। इन सब में हम युद्ध के खतरों और विनाश का सामना करने वाले तृतीय विश्व को देख सकते हैं। जो उपनिवेशी नियंत्रण से बाहर आने का प्रयत्न कर रहे थे। ये युद्ध सोवियत और US के द्वारा नहीं किये जा रहे थे बल्कि तृतीय विश्व के लोग ये युद्ध कर रहे थे।

सैन्य एकीकरण (Military Alliances)

USA और USSR दोनों के पास आणविक हथियार थे लेकिन वे अच्छी तरह जानते थे कि आणविक युद्ध में दोनों नहीं जीत सकते, फिर भी उन्होंने सैन्य और सामरिक एकीकरण का निर्माण किया - पश्चिम में इस संधि को 1949 में एक संगठन में बदल दिया जिसे नार्थ एटलांटिक ट्रीटी आर्गनाइज़ेशन (NATO) के नाम से जाना जाता है। इसका सामना करने के लिए साम्यवादी देशों ने भी इसी प्रकार की संधि की और 'वार्सा संधि' पर हस्ताक्षर किए। इसके साथ ही US ने दक्षिण-पूर्वी एशियन ट्रीटी ऑर्गोनाइज़ेशन (SEATO) और सेंट्रल ट्रीटी ऑग्रनाइजेशन (CENTO) जैसी सैन्य और सामरिक संधि की स्थापना की।

यद्यपि उन्होंने सैन्य संगठनों के द्वारा स्वयं को शक्तिशाली बना लिया था, लेकिन वे जानते थे कि युद्ध करने से मानव जीवन का वृहत रूप में नुकसान होगा जिससे पूरी सभ्यता खतरे में पड़ सकती है। इसीलिए उन्होंने एक दूसरे से स्थिर संबंध बनाये रखे।

इस संधि ने अपने प्रभाव का विस्तार करने की इच्छा रखने वाली बड़ी शक्तियों को निम्न लाभ प्रदान किए:-

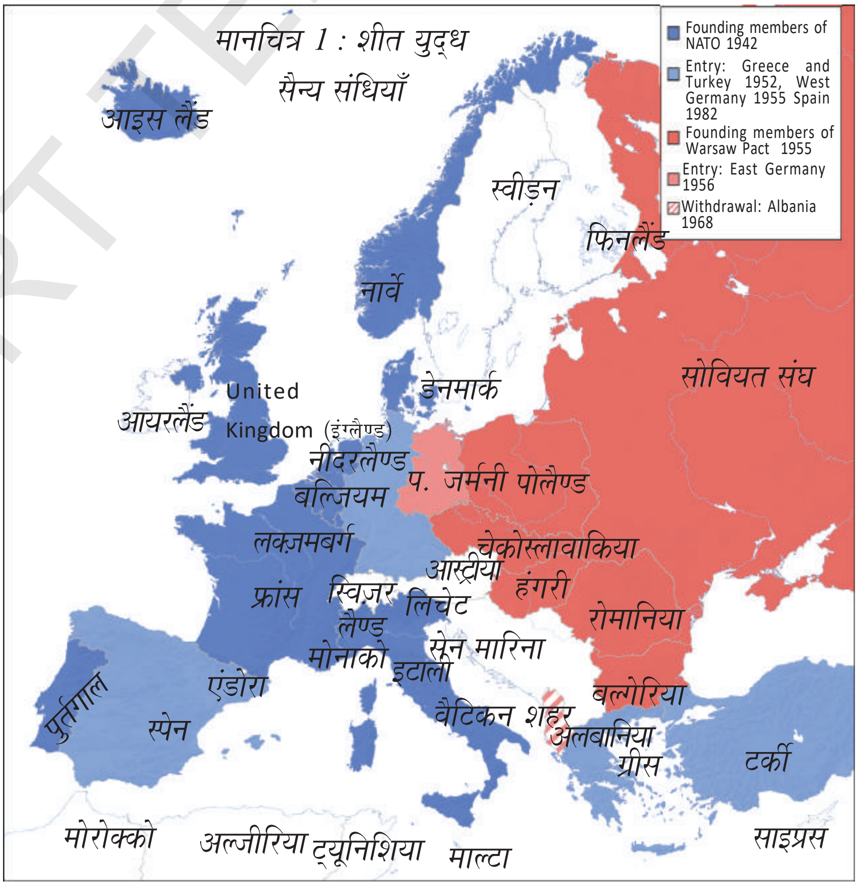

मानचित्र 1 : शीत युद्ध
सैन्य संधियाँ

- तेल और खनिज जैसे महत्वपूर्ण स्त्रोत
- उनके उत्पादों के लिए बाजार और पूँजी के सुरक्षित निवेश के लिए स्थान
- उनकी सेना और हथियार रखने के लिए सैन्य स्थल
- उनके विचारों का विस्तार और
- आर्थिक सहायता, भारी सैन्य खर्च का भुगतान

हथियार और अंतरिक्ष दौड़ (Arms and Space Race)

USSR और USA दोनों ने हथियारों पर शोधकार्य के लिए भारी मात्रा में धन खर्च किया और विध्वंसकारी नाभिकीय हथियारों और मिसाइलों के लिए शस्त्रागारों का निर्माण किया जो महाद्वीपों को नष्ट कर सकते थे। दोनों देशों के पास कुल मिलाकर पर्याप्त नाभिकीय हथियार थे, जिससे कई बार संपूर्ण पृथ्वी को नष्ट किया जा सकता था। शनैःशनैः उनके मित्र देश ब्रिटेन, फ्रांस और चीन ने भी नाभिकीय शस्त्रागारों का निर्माण किया। यह स्पर्धा अंतरिक्ष तक पहुँच गयी क्योंकि सैटलाइट मिसाइलों को दिशा निर्देश देने और जासूसी करने में सहायक थे। USSR ने पहला सैटलाइट स्पुतनिक और पहला मानव यूरी गैगरिन अंतरिक्ष में भेजा। इससे दोनों देशों के बीच अधिक से अधिक सैटलाइट भेजने की प्रतिस्पर्धा बढ़ी और 1969 में US ने भी नील आर्मस्ट्रांग और अन्य को चंद्रमा पर भेजा।

चित्र 19.5 : (बायें) यूरी गैगरीन (दायें) चंद्रमा पर आदमी

मुख्य बिंदु (Flash points)

प्रतिद्वन्दी शक्तियों ने विध्वंसकारी हथियारों को एकत्रित किया था, इसीलिए संसार नाभिकीय विनाश के कगार पर खड़ा था। सभी देशों के लोग निरंतर युद्ध के भय में जी रहे थे। ऐसे कई क्षण आए जब दो देशों के बीच नाभिकीय युद्ध की स्थिति सन्निकट थी, लेकिन कूटनीति से इसे रोक दिया गया था। ऐसी कुछ घटनाएँ थीं जो U2 US जासूसी जहाज को ऊँचा उठाने, क्यूबा में सोवियत मिसाइल निर्माण केंद्र की खोज और कोरिया और मध्य पूर्वी युद्धों के समय कई बार घटीं।

गुट निरपेक्ष आंदोलन(NAM) (Non Alignment Movement (NAM))

1950 में विश्व में सैन्यकरण बढ़ रहा था और विश्व दो विरोधी दलों में बँट गया था। सैन्य सर्वोच्चता, वैचारिक मतभेद और आर्थिक सर्वोच्चता प्राप्त करने के लिए दोनों महान शक्तियों के बीच शत्रुता के कारण द्विध्रुवीय संसार की स्थापना हुई। जो इन झगडों में नहीं पड़ना चाहते थे उनपर अधिक प्रभाव नहीं पड़ा। लेकिन उन्हें प्रभावित करने के प्रयास जारी थे। वे लोग जो

SCERT TELANGANA

अभी अभी गरीबी बीमारी, असमानता और उपनिवेशवाद से मुक्त हुए थे इस प्रकार के विवादों के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहते थे।

नये स्वतंत्र देशों के नेता असुरक्षा और तनाव की स्थिति में परिवर्तन की आवश्यकता महसूस कर रहे थे। इसीलिए 1955 में इंडोनेशिया के बाडुँग में एक सभा हुई। यह 29 देशों के प्रतिनिधियों की प्रथम एशिया-अफ्रीकी सभा थी। भारत के तत्कालीन प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू, इजिप्त के नेता गमाल अब्दुल नासेर तथा युगोस्लाविया के नेता जोसिप ब्रोज़ टीटो सभा के महत्वपूर्ण नेता थे। जवाहरलाल नेहरू को मुख्य अधिवक्ता स्वीकार किया गया। इससे गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) का मार्ग सुगम हुआ।

चित्र 19.6 : (1960 की NAM सभा में) ज.नेहरू, केन्या के क्वामे क्रूम्हा, इजिप्त के गमल अब्देल नसीर, इंडोनेशिया के सुकर्णो, युगोस्लाविया के टीटो

फलस्वरूप, एशिया और तत्पश्चात लैटिन अमेरिका के नये स्वतंत्र राज्यों में सांस्कृतिक और आर्थिक सहयोग के उद्देश्य से अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के रूप में गुटनिरपेक्ष की स्थापना की गयी।

पहला सम्मेलन सितंबर 1961 में युगोस्लाविया के बेलग्रेड में हुआ। इसमें 25 सदस्य देशों ने भाग लिया। 2012 तक 120 देश इसके सदस्य बन गए और निरीक्षकों की संख्या 17 हो गयी। पहले सम्मेलन में तीन मुख्य बातों को प्रधानता दी गयी।

- (NAM) गुटनिरपेक्ष के सदस्य राज्यों में सहयोग। इनमें से अधिकतर वे राज्य थे जो हाल ही में स्वतंत्र देश के रूप में उभरे थे।
- शीत युद्ध के तनाव में वृद्धि और विश्व पट इसका बढ़ता प्रभाव।
- अंतिम, नये स्वतंत्र देशों को सैन्य दल में सम्मिलित होने से रोकना।

जब दो महान शक्तियों अलग हो रही थी और देशों को अपनी ओर खींच रही थी तब कई वर्ष तक NAM भारत जैसे देशों को स्वतंत्र रूप से स्थापित होने में सहायता कर रहा था। वह दोनों महान शक्तियों को एक दूसरे के खिलाफ भड़का कर उनके द्वारा नये विकसित देशों को स्थान और सहायता लेने में भी मदद कर रहा था। कुछ हद तक उसने NAM को विस्तृत अंतर्राष्ट्रीय मामलों में USSR का समर्थन करने का आरोप लगाया। सोवियत के अफगानिस्तान पर आक्रमण करने के मामले मेंNAM के सिद्धांतों के विपरीत एक तरफा ठहराया। NAM की दूसरी कमज़ोरी यह थी कि वह अपने सदस्यों को एक दूसरे के विरूद्ध युद्ध करने से

- 1955 के बाडुंग सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य क्या था?
- गुटनिरपेक्ष के सिद्धांतों के प्रति महान शक्तियों की क्या प्रतिक्रिया थी?
- गुट निरपेक्ष देश तृतीय विश्व के देश क्यों कहलाते थे?

प्रभावपूर्ण ढंग से रोकने में असमर्थ था। इसी कारण जब ईरान और ईराक सात या अधिक वर्षों तक युद्ध करते रहे, तब NAM ने इसके लिए थोड़ा बहुत कार्य किया। इन सीमाओं के बावजूद भी NAM ने नये स्वतंत्र देशों को दो महान् शक्तियों के बीच फँसे विश्व के अंतर्राष्ट्रीय कार्यों में अपना स्वायत्त शासन का अधिकार माँगने में सहायता की।

पश्चिम एशियाई मतभेद (West Asian Conflicts)

यूरोप और एशिया के मध्य के क्षेत्र को पश्चिमी एशिया माना जाता है। इस क्षेत्र के वर्णन के लिए पूर्वी मध्य शब्द का उपयोग भी किया जाता है। अरबों और यहुदियों के बीच झगड़ों को पश्चिमी एशियाई क्रांति कहा जाता है। यह मुख्य रूप से फिलिस्तीनियों के व्यवसाय से संबंधित था। द्वितीय विश्व युद्ध से पहले फिलिस्तीन जहाँ अरब रहते थे, ब्रिटेन के नियंत्रण में था। इसी के अंतर्गत यहूदियों, इसाईयों और मुसलमानों का धार्मिक शहर जेरूसलम स्थित था।

यहूदियों ने सांस्कृतिक रूप से फिलिस्तीन को अपनी 'प्रतिज्ञा भूमि' मान लिया था, जहाँ से प्राचीन काल में उन्हें निष्कासित कर दिया गया था और यूरोप और एशिया के आरपार ढकेल दिया गया था। यूरोप में वे एक पीड़ित समुदाय थे क्योंकि ईसाई उन्हें ईसा मसीह को शरीर पर कीलें ठोक कर सूली पर चढ़ाने के लिए उत्तरदायी मानते थे। जब यूरोप के यहूदियों को जेल में डाल दिया गया और उनकी हत्या की गयी तब नाजी के नेतृत्व में जर्मनी में मतभेद चरम सीमा पर पहुँच गया।

यहूदियों में एक आंदोलन का विकास हुआ जो 'यहूदी आंदोलन' कहलाया, जिसने संसार में फैले सभी यहूदियों को एक होने, फिर से फिलिस्तीन की अपनी जन्मभूमि बनाने तथा अलग यहूदी राज्य का निर्माण करने की पुकार की। 1945 के पश्चात पश्चिमी शक्तियों ने इस माँग का समर्थन किया। क्योंकि फिलिस्तीनी (जो अधिकतर अरब के मुसलमान थे) पहले से ही वहाँ रह रहे थे, यह विवाद की जड़ बन गया था।

मध्य पूर्व, विशेषकर अरबी प्राय:द्वीप में तेल के बृहद कोष की खोज से मामला और संदिग्ध हो गया था। US और USSR दोनों इस क्षेत्र को अपने अधिकार में लेना चाहते थे और अन्य देश को अपना नियंत्रण स्थापित करने से रोक रहे थे।

1947 में संयुक्त राष्ट्र ने एक समाधान निकाला जिसके अनुसार फिलिस्तीन को दो भागों - अरब और यहूदी राज्य में बाँट दिया गया। 1948 में ब्रिटिश ने अपनी सेना फिलिस्तीन से हटा ली और यहूदियों के लिए इजराइल बनाया गया। अरब अपनी जन्मभूमि नहीं देना चाहते थे। अरबों ने इजराइल को वैधानिक राज्य मानने से इंकार कर दिया। इजराइल के द्वारा अपनायी गयी नीतियों ने और कड़वाहट बढ़ा दी। अरबों को जबरदस्ती अपना घर और संपत्ति छोड़नी पड़ी और शरणार्थी के रूप में अन्य अरब राज्यों में शरण लेनी पड़ी।

इजिप्त के राष्ट्रपति गमाल अब्देल नासेर (1918-1970) ने अरबों को एक करने का प्रयास किया। उसने इजराइल में सार्वजनिक स्थलों पर विस्फोटों के लिए फिदायीन (आत्म हत्या दल) बनाए। उसने ब्रिटेन और फ्रांस के विरूद्ध आक्रमक नीतियाँ अपनायी और ब्रिटेन से स्वेज नहर से अपनी सेना हटाने की माँग की। स.रा. ने असवान बाँध के निर्माण के लिए इजिप्त को दी जाने वाली सहायता बंद कर दी। नास्सेर ने USSR की सहायता से स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण किया। USSR ने पश्चिम के विरुद्ध इजिप्त के संघर्ष के लिए अस्त्र-शस्त्र और गोला-बारूद की आपूर्ति की ।

SCERT TELANGANA

Map 2 : Palestinian Loss of Land 1947 to Present

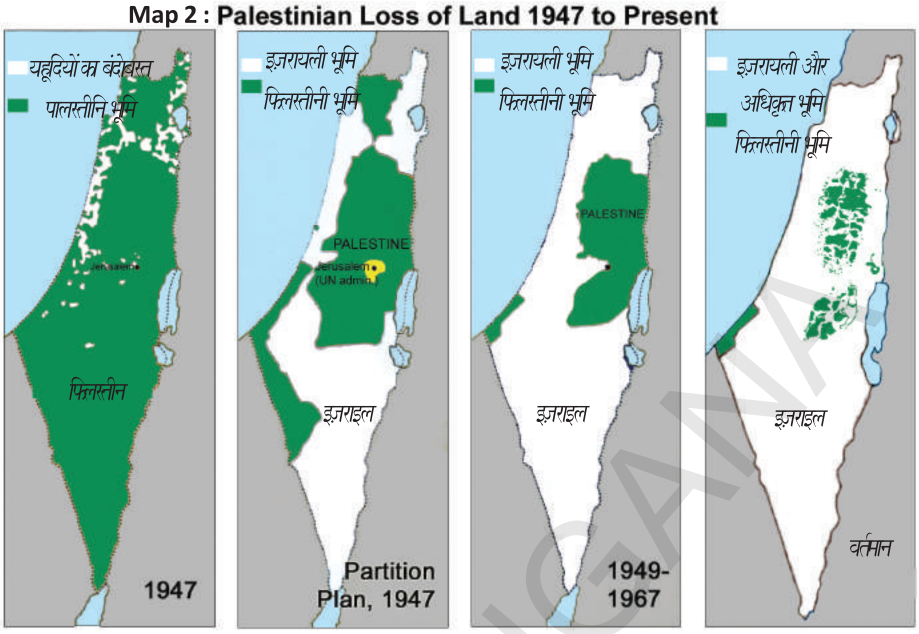

1956 में इजराइल ने पश्चिमी शक्तियों की सहायता से इजिप्त पर आक्रमण किया और सं. रा. तथा USSR दोनों ने युद्ध खत्म करने तथा शांति की माँग की। इज़राइल को अपनी सेना हटानी पड़ी। 1967 में अरबों ने एक बार फिर इज़राइल पर आक्रमण किया। इज़राइल ने आक्रमण को बचाव का मुख्य साधन माना और इजिप्त पर आक्रमण कर दिया तथा उसकी संपूर्ण वायु सेना नष्ट कर दी। उसने गाज़ा, गोलक हाइट और पश्चिमी किनारे के क्षेत्र पर भी अधिकार कर लिया। इजराइल ने जीते हुए प्रदेशों को वापस लौटाने से तो इनकार कर दिया लेकिन शांति के लिए हामी भर ली। इजराइल समझ रहा था कि अधिकार में आए ये क्षेत्र उभय क्षेत्रों के रूप में काम आ सकते हैं। इस युद्ध ने अरब के प्रभाव को कम कर दिया।

उसी समय जार्डन ने पेलेस्तीनियन लिबरेशन अंर्गेनाइज़ेशन (PLO)नामक संगठन की स्थापना की गयी जिसने सभी विभिन्न अरब गुटों को एक साथ लाकर एक नया आयाम दिया। उसका उद्देश्य हटी हुई भूमि को बिना हिंसा के वापस पाना था। लेकिन, 1967 में यासेर अराफत के नेतृत्व में PLO ने दबाव डाला और इज़राइल पर आक्रमण करने के लिए अरब राज्यों पर दबाव डाला। लेकिन अरब राज्य अधिक उत्साही नहीं थे। इसीकारण अराफत के नेतृत्व में PLO के एक दल ने हवाईजहाज हाइजैक करना, 1972 सितंबर में म्यूनिच ओलम्पिक में इजराइल ओलंपिक स्क्वैड को बंधक बनाना और कई खिलाड़ियों की हत्या करना जैसे आतंकवादी हमले किये। फिलिस्तिनियों द्वारा किये गये आक्रमण के बदले में इजराइल ने भी उन पर आक्रमण किये और अपने द्वारा किये गये वादों को कार्यान्वित करने से इनकार कर दिया। हिंसा और उसके विरोध में प्रतिहिंसा के परिणाम स्वरूप वह क्षेत्र निरंतर युद्ध की स्थिति में था। PLO भी कई पारस्परिक - युद्धीय गुटों में बँट गया था। तभी अराफत ने आतंकवाद छोड़ दिया और इजराइल के संगठन को मान्यता प्रदान करते हुए शांतिपूर्ण तरीके से समाधान ढूँढ़ने के लिए राजी हो गया। लंबा युद्ध बंद करने के लिए उसने इजराइल के साथ सौदा किया और फिलिस्तिनियों के स्वशासन से संबंधित कई समझौते किए ।

- अरब और इजराइलों के बीच झगड़े के क्या कारण थे?
- लड़ाई के समय इजिप्त ने फिलीस्तिन का समर्थन क्यों किया?
- आप के विचार में कुछ फिलीस्तीनियों ने आतंकवाद का रास्ता क्यों अपनाया? उसका क्या परिणाम निकला?
- शरणार्थी शिविरों में रहने वाले और निरंतर युद्ध और गरीबी का सामना करने वाले फिलिस्तीनियों की परिस्थिति का पता लगाइए।

SCERT TELANGANA

अपनी सेनाओं को हटाने से तैयार होने के साथ - साथ इजराइल फिलिस्तीन के अरब निवासियों को वोट देने का अधिकार प्रदान करने के लिए तैयार हो गया। लेकिन, यह सफल नहीं हुआ क्योंकि इजराइल के किये गये वादों को पूरा करने में असफल था और एक संदर्भ या अन्य कारणों से फिलिस्तीन पर आक्रमण करता रहा। कई देश PLO को फिलिस्तीन राज्य के वैध प्रतिनिधि और अराफत को उसके अध्यक्ष के रूप में मान्यता प्रदान करने के लिए राजी हो गए। धोखे से जहर देने के कारण 2004 से अराफात की मृत्यु हो गयी।देश से निष्कासित करने और युद्ध की अत्यंत कठिन परिस्थितियों में भी फिलीस्तिन अब भी जन्मभूमि और शांति के लिए लड़ रहे थे।

मध्य-पूर्व में राष्ट्रीयता का विकास (The Growth of Nationalism in the middle east)

इज़राइल को US के निरंतर सहयोग और फिलिस्तिनीयों की पुकार ने क्षेत्र में US के विरूद्ध दूर-दूर तक दुर्भावना उत्पन्न कर दी । US इसीलिए भी अप्रसिद्ध हो गया क्योंकि उसने क्षेत्र की अप्रजातांत्रिक व्यवस्था को समर्थन किया ताकि US और उसके गठबंधित देशों को तेल के स्त्रोत उपलब्ध हो सके। लोग चाहते थे कि तेल - स्त्रोतों से प्राप्त आय का उपयोग मरूस्थलीय क्षेत्र की साधारण जनता के कल्याण के लिए किया जाय जिनके पास आय का कोई अन्य साधन नहीं था। 1968 में इराक में एक षडयंत्र हुआ जिससें अरब राष्ट्रीयता और समाजवाद के दो नारो के साथ सद्दाम हुसेन सत्ता में आया । समाजवाद से उनका मतलब तेल - स्त्रोतों का राष्ट्रीयकरण और राज्य द्वारा तेल से प्राप्त आय का उपयोग नागरिकों के कल्याणकारी कार्यो के लिए करना था। 1969 में लिबिया में ऐसी ही स्थिति उत्पन्न हुई। (इसके बारे में आप नवीं कक्षा अध्याय 18 में पढ़ चुके हैं)। इस व्यवस्था में छोटे दल या अत्यधिक निरंकुश और अत्याचारी शासन के साथ कल्यणकारी नीतियाँ जुड़ी थी । वे अपने विरूद्ध किसी शत्रु या प्रजातांत्रिक विरोध स्वीकार नहीं करते थे।

कई मामलों में US और US के समर्थकों के विरोध ने धार्मिक रूप ले लिया था। राष्ट्रीय सेना पूँजी और अवसरों के समान वितरण के उपाय का समर्थन करने के बदले, उन देशों में धार्मिक रूढ़ियों की स्थापना कर रही थी। 1979 में ईरान में एक क्रांति हुई जिसमें ईरान के पूर्व शासक (जिसको US का समर्थन प्राप्त था) को हटा दिया गया और इस्लामी शिया अफसरों और प्रजातांत्रिक रूप से चुने गये नेताओं द्वारा संयुक्त रूप से नियंत्रित एक नई सरकार की स्थापना की गयी।

सोवियत सैनिकों के वापस चले जाने के बाद तालिवान में अफगानिस्तान पर अधिकार स्थापित कर लिया और उसी प्रकार के एक उग्रवादी इस्लामी राज्य की स्थापना की । ये राज्य धार्मिक पुस्तकों के आधार पर अपनाये गये नियमों का पालन करने के लिए लोगों को विवश कर रहे थे । कई मामलों में इसका अर्थ आधारभूत स्वतंत्रता और औरतों और धार्मिक अल्पसंख्यकों को समान अवसर प्रदान करने से इंकार करना था।

21 वीं 'सदी के आरंभ में अरबों' में असंतोष की भावना दिखाई पड़ी जिसके परिणाम स्वरूप धार्मिक आतंकवाद का विकास हुआ। कुछ अरब आतंकवादियों ने US में दो वायुयानों का अपहरण किया और न्यूयार्क का वर्ल्ड ट्रेड सेंटर (World Trade Centre) नष्ट कर दिया जिसमें हज़ारों लोग मारे गये। इसके कारण तालिबान के विरूद्ध युद्ध हुआ और साथ ही ईराक के विरूद्ध भी युद्ध हुआ। समाचार-पत्रों और मैगजीनों से इस प्रकार की घटनाओं का पता लगाइए।

शांति आंदोलन, USSR का पतन और शीत युद्ध की समाप्ति (Peace movement, Collapse of the USSR and the end of the cold war)

जैसे-जैसे समय बीतता गया USSR और USA पर नाभिकीय शस्त्रागारों को नष्ट करने और शस्त्र स्पर्धा को रोकने के लिए जनता का अत्यधिक दबाव पड़ता गया। इसके बारे में और अधिक आप इस पुस्तक में बाद में पढ़ेंगे। इससे उन्हें हथियार दौड़ के कारण जमा हुए हथियारों के भंडार को कम करने और 1985 से 1991 के बीच नाभिकीय परीक्षण पर प्रतिबंध लगाने के लिए बातचीत करने के लिए विवश किया गया।

USSR में मिखाइल गोर्बाचेव के सत्ता में आने के द्‌वारा यह संभव हो सका था। उन्होंने USSR की राजनीति को अधिक खुली बनाकर और मौलिक परिवर्तन लाकर उसमें परिवर्तन लाने का प्रयत्न किया। वह उदार था। इसने अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवन करने के लिए और पश्चिम से गहरे संबंध बनाने के लिए कई सुधार आरंभ किये। खुली शासन व्यवस्था के द्‌वारा आरंभ किये गये सुधार प्रायः ग्लैस्‌नोस्ट(Glassnost) और पेरेस्ट्रॉइका (Perestroika) के रूप में वर्णित किये जाते हैं ।

चित्र 19.7 : बर्लिन दीवार का विध्वंस जो पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी को विभाजित करती थी।

उसी समय पूर्वी यूरोप के देशों को घोर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा, USSR उनकी सहायता की स्थिति में नहीं था। परिणाम स्वरूप स्वतंत्रता, प्रजातंत्र और आर्थिक सुधार की माँग करते हुए सम्पूर्ण पूर्वी यूरोप में आंदोलन आरंभ हो गये। देश को नष्ट होने से बचाने में सरकार असमर्थ थी। यह अप्रसिद्ध बर्लिन दीवार को तोड़ने का सही मौका था जो पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी को विभाजित करती थी और साथ ही जर्मनी पर USSR के नियंत्रण को भी कम करने का सही मौका था।

- ‘द्‌विध्रुवीय’ और ‘एक ध्रुवीय’ शब्दों की व्याख्या कीजिए।

USSR में भी कट्टर साम्यवादियों ने गोर्वाचेव को सत्ता से हटाने के लिए एक षडयंत्र रचा । इसे नष्ट कर दिया गया और रूस संसद की ओर से बोरिस येल्‌स्तीन(Boris Yelstin) ने षडयंत्र को रोका। वह राष्ट्रपति चुनाव में जीत गया और 1991 में उसने USSR सेना की वापसी की घोषणा कर दी। पूर्व USSR के अधीनस्थ देश स्वतंत्र हो गये और तत्पश्चात उनमें से कई देशों ने रूस के साथ गठबंधन कर लिया । USSR की शक्ति के कम होने के साथ ही विश्व राजनीति में एक ध्रुवीय युग और वैश्वीकरण युग का एक नया युग आरंभ हुआ। आप इसके बारे में इस पुस्तक के अलग अध्याय में पढ़ेंगे।

- अरब समाजवादी राष्ट्रवाद और धार्मिक राष्ट्रवाद में क्या समानताएँ और भिन्नताएँ हैं?
- धार्मिक राज्य किस प्रकार कार्य करते हैं यह पता लगाने के लिए तालिबान के शासन में ईरान और आफगानिस्तान में विकास का पता लगाइए ।

भारत और उसके पड़ोसी (India and its neghbours)

हमने देखा है कि भारत NAM का संस्थापक है, जो दो महाशक्तियो के बीच स्वतंत्र स्थिति बनाना चाहता है।भारत ने गाँधीजी के शांति और अहिंसा के सिद्धांतों के आधार पर अपनी विदेश नीति बनाने का प्रयास किया।शांति के अपने संकल्प पर बल देने के लिए जवाहरलाल नेहरू ने अपने प्रसिद्ध पंचशील सिद्धांतों का सूत्रीकरण किया।

1. एक-दूसरे की प्रभुत्व-संपन्नता और प्रादेशिक अखण्डता का आदर करना।
2. अन्य देशों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना।
3. अनाक्रमण और आपसी सद्‌भावना से विवादों का निर्णय करना।
4. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में सहयोग प्राप्ति के प्रयास और पारस्पारिक सम्मान करना।
5. शांतिपूर्ण रूप से मिलजुलकर रहने की भावना का विकास करना।

ये अन्य देशों के साथ, विशेष कर इसके पड़ोसी देशों - चीन, पाकिस्तान, श्रीलंका और तत्पश्चात बंगलादेश के साथ भारत के संबंध दृढ़ बनाने के लिए थे।

अपने पड़ोसियों के साथ निम्न लिखित भारतीय संबंधों के बारे में पढ़िए और देखिए कि वह किस हद तक इन सिद्धांतों पर आधारित है।

चीन के साथ भारत के संबंध (India's relation with China)

लंबे संघर्ष और हिंसात्मक क्रांति के पश्चात, 1949 में चीन साम्यवादी गणतंत्र बन गया। चीन की साम्यवादी सरकार को मान्यता प्रदान करने वाला भारत पहला देश था । भारत ने चीन को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UN Security Council)में स्थायी सीट के लिए भी समर्थन किया, जो सीट पहले चियांग काई शेक सरकार के कब्जे में थी। विचारधाराओं में अंतर होने के बावजूद भी बाडुँग सम्मेलन में भाग लेने में भारत ने चीन की सहायता की। 29 अप्रैल 1954 में दोनों देशों ने पंचशील समझौते पर हस्ताक्षर किये। दोनों देशों के नेताओं ने एक-दूसरे के देश का भ्रमण किया और बड़े मित्रवत भाव से जनता के द्‌वारा उनका सम्मान किया गया।

उपनिवेशी शासन के समय मैक मोहन रेखा (Mac Mohan Line) दोनों देशों के बीच की सीमा रेखा थी। नेहरू जी ने उसे स्वीकार किया। चीन और भारत के बीच विद्‌यमान तिब्बत एक स्वतंत्र अंतस्थ राज्य (independent buffer zone) था। लेकिन 1950 में चीन ने तिब्बत को इस आधार पर मिला लिया कि तिब्बत प्राचीन चीनी साम्राज्य का स्वतंत्र राज्य था। इसके दोनों देशों के बीच का अंतस्थ राज्य हट गया। तिब्बत में एक क्रांति हुई जिसे चीन ने दबा दिया। दलाई लामा के साथ हज़ारों तिब्बती बच गये और भारत में शरण ली । भारत ने दलाई लामा को शरण दी, इसके कारण विरोध उत्पन्न हुआ और चीन ने भारत को अपना शत्रु समझना आरंभ कर दिया। इससे पहले भारत और चीन के बीच सीमा संबंधी झगड़े आरंभ हो गये। चीन ने लदाख के अकसाई - चिन (Aksai-Chin)क्षेत्र और अरुणाचल प्रदेश के अधिकतर क्षेत्र पर अपना दावा किया। कई प्रयासों और लंबी चर्चाओं के बावजूद आज तक भी झगड़ा सुलझ नहीं पाया ।

भारत के साथ शांति समझौते का उल्लंघन कर 1962 अक्तूबर में चीन ने भारत पर आक्रमण किया । भारत इस अचानक आक्रमण के लिए तैयार नहीं था और उसे बहुत हानि पहुँची। तभी चीन ने एकपक्षीय युद्‌ध विराम की घोषणा की और युद्धपूर्वी स्थिति में अपनी सेना

वापस ले ली। सामान्य संबंध फिर से स्थापित करने में दस में भी अधिक वर्ष लगे। पूर्ण कूटनीतिज्ञ संबंध 1976 में ही पुनर्निर्मित किये जा सके।

अब दोनों देशों को रणनीति के साथ - साथ आर्थिक लाभ भी था क्योंकि दोनों देश एशिया की उभरती शक्तिओं के रूप में माने जा चुके थे। आज दोनों देशों को महत्वपूर्ण विश्व अर्थ व्यवस्था और राजनैतिक शक्तियों के रूप में प्रकट होने की प्रगाढ़ अभिलाषा थी। इसीलिए दोनों देश एक-दूसरे को आर्थिक और राजनैतिक प्रतिस्पर्धी के रूप में देखते थे । सीमाओं पर, दोनों सरकारों ने कभी - कभी विरोधपूर्ण कार्यो के बावजूद शांति बनाये रखने के लिए कदम उठाये।

- क्या आपके विचार में भारत का दलाई लामा और उसके तिब्बतीय समर्थकों को शरण देना सही था?
- क्या आपके विचार में चीन का तिब्बत पर नियंत्रण की आशा करना न्यायपूर्ण था ?
- आपके विचार में दोनों देश किस हद तक सीमा संबंधी अपने पुराने संघर्ष को भुला सकते हैं और अर्थपूर्ण सहयोग और मित्रता विकसित कर सकते हैं?

भारत के पाकिस्तान के साथ संबंध (India's relation with Pakistan)

जैसे हमने पहले पाठ में देखा है कि ब्रिटिश इंडिया (British India) को बांट कर भारत और पाकिस्तान दो स्वतंत्र देश बन गये थे । विभाजन के पश्चात भारत और पाकिस्तान के बीच झगड़ा शाश्वत हो गया था, दोनों देशों के बीच विवाद का मुद्दा काश्मीर था।

कश्मीर के लिए दोनों देशों के बीच प्रथम युद्ध 1947-48 में हुआ। लेकिन समस्या का समाधान नहीं निकला। युद्ध में कश्मीर को दो भागों में बाँट दिया:पाकिस्तान आधिपत्य कश्मीर (POK)और नियंत्रण रेखा(Line of Control) द्वारा विभाजित भारतीय प्रांत।

1965 में, जब लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री थे, तब पाकिस्तान जनरल अयुब खान की सैन्य तानाशाही के अधीन था । कश्मीर को स्वतंत्र कराने के नाम पर भारत पर आक्रमण के द्वारा अयुब खान कश्मीर में क्रांति उत्पन्न करना चाहता था। लेकिन कश्मीर के लोगों ने इसके प्रति कोई प्रतिक्रिया नहीं की और युद्ध प्रयासों में भारतीय राज्य का साथ दिया। भारत ने प्रतिक्रिया में लाहोर को लक्ष्य बनाकर पंजाब में मोर्चा लगाया। और इसने पाकिस्तान को कश्मीर मोर्चे से पीछे हटने के लिए विवश किया। UN सेक्रेटरी जनरल यू थांट ने दोनों देशों को युद्ध विराम के लिए समझाया ।

युद्ध-विराम के पश्चात दोनो देशों के प्रधान मंत्रियों ने 1966 में ताशकंद में एक समझौते पर हस्ताक्षर किये।

1970 के आरंभ में, पाकिस्तान को बहुत बड़े

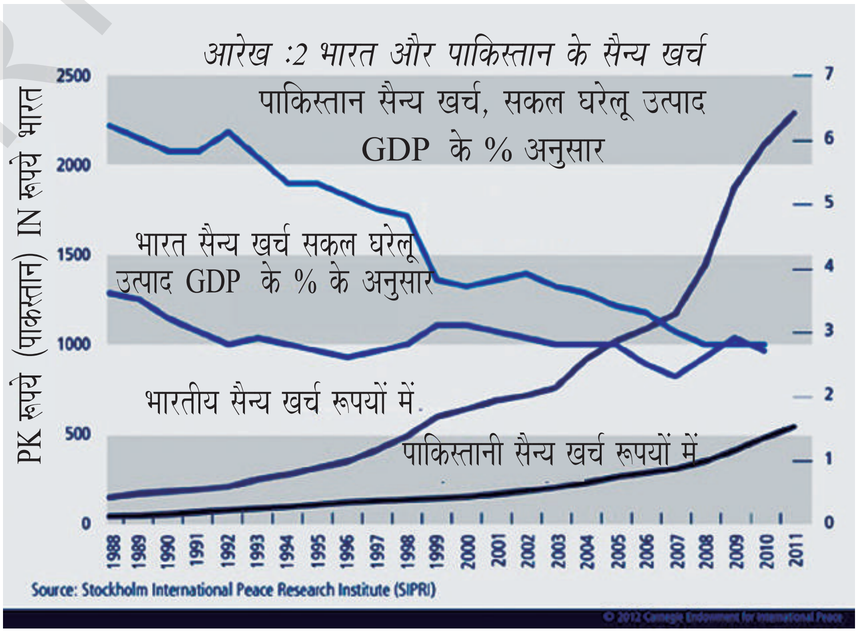

SCERT TELANGANA

धर्म और युद्ध

युद्ध की समाप्ति के पश्चात दिल्ली में एक रैली में लाल बहादुर शास्त्री ने, पाकिस्तान के युद्ध में धार्मिक चिह्नों का उपयोग करने के प्रयत्न की आलोचना करते हुए कहा कि यह हिन्दुओं के विरूद्ध मुसलमानों का युद्ध था। उन्होंने गर्व से कहा कि भारत एक धर्मनिपेक्ष देश हैं।

''हमारे देश की अनोखी बात यह है कि हमारे पास हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख, पारसी और सभी धर्मो के लोग हैं। हमारे पास मंदिर, मसजिद, गुरूद्वारे और चर्च हैं। लेकिन हम इन सबको राजनीति में नहीं ला सकते...भारत और पाकिस्तान के बीच यही अंतर है। पाकिस्तान अपने आपको इस्लामी राज्य बतलाता है और धर्म का उपयोग राजनैतिक तत्व के रूप में करता है, हम भारतीयों को किसी भी धर्म को मानने की स्वतंत्रता है और हम अपनी इच्छानुसार किसी भी प्रकार से पूजा कर सकते हैं। लेकिन जहाँ तक राजनीति का संबंध है, हम में से प्रत्येक उतना ही भारतीय है जितना कि दूसरा।''

आंतरिक विवाद का सामना करना पड़ा। पाकिस्तान के सैन्य अधिनायक, जनरल याहिया खान ने प्रजातांत्रिक सरकार का वादा करके चुनाव के आदेश दिये। चुनाव के अलग-अलग परिणाम निकले। पश्चिमी पाकिस्तान में जुल्फीकार अली भुट्टों की जीत हुई जबकि पूर्वी पाकिस्तान के चुनाव में शेख मुजीब-उर-रहमान के नेतृत्व में आवामी लीग की जीत हुई। लेकिन पाकिस्तानी सरकार ने न तो फैसले को और न ही पूर्वी पाकिस्तान पर स्वायत्त शासन की माँग को माना। इसके बदले, उन्होंने मुजीब-उर-रहमान को गिरफ्तार कर लिया और आतंकवाद का शासन, आरंभ किया। भारत को पूर्वी पाकिस्तान से शरणार्थियों के प्रवाह का सामना करना पड़ा। मुजीबुर रहमान के समर्थकों ने 'मुक्त वाहिनी'(Mukti Vahini)के रूप में स्वतंत्रता संघर्ष आरंभ किया। भारत ने अपनी प्रधान मंत्री, इंदिरागांधी के अधीन, उन्हें सहायता प्रदान करनी आरंभ की और इसके लिए अंतर्राष्ट्रीय समर्थन प्राप्त करने का प्रयत्न किया। भारत ने USSR के साथ संधि पर भी हस्ताक्षर किये जो भारत को समर्थन देने का वादा करती थी।

दिसंबर 1971 में पाकिस्तान के साथ बड़े स्तर पर युद्ध आरंभ हो गया। पूर्वी पाकिस्तान की स्वतंत्रता के पश्चात ही युद्ध समाप्त हुआ जिसके फलस्वरूप बंगलादेश का निर्माण और भारत के द्वारा युद्ध विराम की घोषणा की गयी। तत्पश्चात जुल्फेकार अली भुट्टों और प्रधानमंत्री इंदिरागांधी के नेतृत्व में दोनों देशों के बीच शिमला समझौते पर हस्ताक्षर किये गये।

1971 से अब तक सीधे युद्ध तो नहीं हुए हैं, लेकिन सीमा की समझ अपनी-अपनी स्थिति के लिए अनगिनत छुट-पुट झगड़े और लडाइयाँ होती रही हैं। आपने 'कारगिल युद्ध' के बारे में सुना होगा जिसमें पाकिस्तानी सेना के समर्थन से भारतीय विरोधी उग्रवादियों ने भारत के कुछ क्षेत्रों पर आधिपत्य स्थापित कर लिया और 1999 में महत्वपूर्ण सैन्य मार्च के द्वारा उन्हें खदेड़ना पड़ा।

वर्षो से पकिस्तान भारत के सीमांत राज्यों जैसे पंजाब और जम्मू काश्मीर में पृथकीकरण आंदोलनों को बढ़ावा दे रहा था। भारत हमेशा पाकिस्तान पर ऐसे आंदोलनों का समर्थन करने और धार्मिक आतंकवादियों को प्रशिक्षित करने और भारत में अशांति फैलाने के लिए भेजने का आरोप लगाता रहता था। इसके विपरीत पाकिस्तान भारत को उसे अस्थायी बनाने का आरोप लगा रहा था और सैन्य कार्यो से भय दिखा रहा था और नाभिकीय हथियारों और मिसाइलों का अत्यधिक संग्रह कर रहा था। इसके कारण दोनों देश अत्यधिक मात्रा में दुर्लभ धन एक - दूसरे के विरूद्ध हथियार खरीदने पर खर्च करने लगे।

दोनों देश के पास परमाणु हथियार थे और वे उनका प्रयोग निवारकों (Detereent) के रूप में करने में विश्वास रखते थे। बहुत लंबे समय तक सभ्यता और संस्कृति की सहभागिता होने पर भारत और पाकिस्तान के लोगों ने अनेकों बार निहित हितों के कारण उत्पन्न घृणा से उबरने तथा व्यापार,

खेल, फिल्म, पर्यटन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के द्‌वारा मित्रता स्थापित करने का प्रयास किया। कई भारतीय और पाकिस्तानी यह अनुभव करते हैं कि दोनों देशों में व्याप्त धर्मनिर्पेक्षता, प्रजातंत्र और स्वतंत्रता से दोनों देशों के लोगों में समझ और सहयोग की भावना का विकास होगा। इन आदर्शों को यदि चोट पहुँचायी जायेगी तो दोनों देशों के बीच संघर्ष उत्पन्न होगा ।

- आपके विचार में दोनों देशों के बीच दीर्घकालिक शांति की स्थापना के लिए भारत और पाकिस्तान को कौन से कदम उठाने चाहिए?
- दोनों देशों के विकास के लिए भारत और पाकिस्तान के बीच शांति की स्थापना क्यों अनिवार्य है?

बंग्लादेश के साथ भारत के संबंध (India’s relation with Bangladesh)

1971 में भारतीय सेना की सहायता से बंगलादेश पाकिस्तान के नियंत्रण से मुक्त हुआ। अपनी स्वतंत्रता के पश्चात इसने भारत के साथ 25 वर्षो के शांति समझौते पर हस्ताक्षर किये। फिर भी उनमें अनेक मुद्‌दों जैसेः- गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों के जल के बँटवारे के बारे में अनेक मतभेद थे। भारत ने बंगला देश से भारत आने वाले लोगों के अवैध प्रवास का भी विरोध किया। बंगला देश सरकार ने भारत द्‌वारा अवैध प्रवेश को रोकने के लिए निर्मित सीमाओं की घेराबंदी पर आपत्ति जतायी थी। वह सोचता था कि भारत का व्यवहार इस क्षेत्र में बड़े भाई जैसा है।

इन मतभेदों के होने पर भी कई मुद्‌दों-विशेषकर आर्थिक मुद्‌दों में दोनों ने एक दूसरे को सहयोग दिया। बंगला देश इंडियन लुक ईस्ट पॉलिसी (Indian look East Policy)का महत्वपूर्ण भाग है, जिसमें म्यांमार के जरिए दक्षिण एशिया से संबंध बनाना हैं। आपदा प्रबंधन पर दोनों एक दूसरे को सहयोग देते हैं। बंगला देश को स्वतंत्र करवाने के लिए अपनी सेवाएँ प्रदान करने और अपना बलिदान देने के लिए बंगला देश ने अनेक भारतीयों को पुरस्कार प्रदान किये।

श्रीलंका के साथ भारत के संबंध

श्रीलंका भारत के दक्षिण में हिंद महासागर में स्थित एक द्‌वीप है। यह 1948 में स्वतंत्र हुआ था।चिरकाल से ही भारत और श्रीलंका के बीच सांस्कृतिक, जातीय और आर्थिक संबंध हैं। एक ही समय में दोनों उपनिवेशवाद से मुक्त हुए और आज तक दोनों प्रजातांत्रिक देश हैं। दोनों देशों के बीच संबंधों में दरार उत्पन्न करने वाला मुद्‌दा है - तमिल भाषी अल्पसंख्यकों के प्रति श्रीलंका सरकार का

चित्र 19.8 : (बायें) 1958 में चीन के विरोध में प्रदर्शन करते लोग इनका कहना था - लाल चीन तिब्बत को हाथ मत लगाओ। (दायें) 1971 में पूर्वी पाकिस्तान के शरणार्थी भारत आते हुए।

- अनेक छोटे देश यह सोचते हैं कि उनके बडे पड़ोसी ‘बड़े भाई’ के जैसा व्यवहार करते हैं? इसका क्या तात्पर्य है ?
- भारत और बंगला देश के मानचित्र को देखिए और बताइए कि दोनों देशों के बीच सहयोग की भावना का होना दोनों के लिए ही अत्यंत महत्वपूर्ण क्यों है?

व्यवहार। आप नवीं कक्षा में इसके बारे में पढ़ चुके हैं। चर्चा का पुनःस्मरण कीजिए।

बड़े पैमाने पर श्रीलंकायी तमिल शरणार्थियों का भारत में आना, एक बहुत बडी समस्या थी। इसके कारण भारत ने सक्रिय रूप से हस्तक्षेप किया। इसके फलस्वरूप द्वीप में शांति बनाये रखने के लिए भारत तथा श्रीलंका और तमिल सैनिकों के बीच एक समझौता हुआ। आप पहले भी पढ़ चुके हैं कि भारत ने श्रीलंका में शांति स्थापना के लिए सेना भेजी थी और आप यह भी जानते हैं कि तमिल सैनिकों द्वारा ही भूतपूर्व प्रधानमंत्री राजीव गाँधी की हत्या की गयी थी।जब श्रीलंका की सरकार ने तमिल सैनिकों के विरूद्ध युद्ध छेड़ दिया, जिसमें बहुत खून खरावा हुआ तथा मानवाधिकारों का उल्लंघन किया गया तब भारत ने हस्तक्षेप न करने का निर्णय लिया। इसके परिणामस्वरूप श्रीलंका ने द्वीप में सैन्य संघर्षों का परित्याग कर दिया।

- भारत द्वारा बंगलादेश को दी जाने वाली सहायता और श्रीलंका में इसकी भूमिका की तुलना कीजिए। परिस्थितियाँ समान थी या विषम। अपने विचार बताइए।

मुख्य बिंदु

सैन्य गठबंधन	प्रॉक्सीयुद्ध (प्रतिनिधि युद्ध)	शस्त्र दौड़	एकध्रुवीय (Unipolar)	
द्विध्रुवीय(Bipolar)	उपनिवेशीकरण से स्वतंत्रता	जातीय संघर्ष	पंचशील	वीटो

अपनी सीखने की क्षमता सुधारें।

1. सही उत्तर चुनिएः निम्न में से शीतयुद्ध से संबंधित कौन का कथन गलत है? (AS_1)
   (अ) अमेरिका और रूस के बीच शत्रुता (आ) अमेरिका और रूस का प्रत्यक्षरूप से युद्ध करना
   (इ) शस्त्र दौड़ को खत्म करना। (ई) दो महान शक्तियों के बीच विचारात्मक युद्ध
2. निम्न में से कौन पश्चिमी एशिया विवाद में शामिल नहीं था? (AS_1)
   (अ) इजिप्त(मिस्त्र) (आ) इंडोनेशिया (इ) ब्रिटेन (ई) इज़रायल
3. विश्व युद्ध के पश्चात विश्व में शक्तियों के स्वभाव में क्या परिवर्तन आये? (AS_1)
4. विश्व में शांति की स्थापना के लिए संयुक्तराष्ट्र किन - किन भूमिकाओं को निभाता है? (AS_1)
5. प्रजातांत्रिक विचारों के होने पर भी कुछ देशों के पास निर्णय लेने की विशेष शक्तियाँ हैं? इस पर अपने विचार बताइए। (AS_2)
6. सैन्य गठबंधनों से महान् शक्तियों को क्या लाभ हुआ ? (AS_1)
7. शीत युद्ध ने सैन्य दौड़ को उत्पन्न करने के साथ-साथ सैन्य नियंत्रण भी किया। कैसे? (AS_1)
8. विश्व में पश्चिमी एशिया तनावों का केन्द्र बन गया था? क्यों? (AS_1)
9. 20वीं शताब्दी के अंत तक विश्व में प्रभुत्व स्थापित करने वाली केवल एक शक्ति थी। इस संदर्भ में NAM की भूमिका के बारे में आप क्या सोचते हैं? बताइए। (AS_1)
10. NAM का गठन केवल सैन्य गठबंधनों के संदर्भ में ही नहीं है बल्कि आर्थिक नीतियों के संदर्भ में भी है।' उत्तर का विवेचन कीजिए। (AS_1)
11. निम्नलिखित अंशों के आधार पर भारत के पडोसी देशों के बीच संबंधों को दर्शाने के लिए एक तालिका बनाइए। वे अंश हैं- संघर्षों के मुद्दे, युद्ध की घटनाएँ, सहायता और सहयोग की घटनाएँ। (AS_3)
12. 'जातीय विवादों ने श्रीलंका के साथ भारत के संबंधों को प्रभावित किया। विवेचन कीजिए। (AS_1)
13. विश्व मानचित्र में निम्न स्थानों की पहचान कीजिए। (AS_5)
    1) पोलैंड 2) USSR 3) वियतनाम 4) स्पेन 5) लॉटिन अमेरिका 6) अफ़ग़ानिस्तान
14. पृष्ठ संख्या 288 में होने वाला आरेख 2 का परिशीलन करके, निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (AS_3)
    1) किस देश का सैनिक व्यय अधिक है?
    2) G.D.P. प्रतिशत में दो देशों के सैनिक व्यय में आपने क्या अवलोकन किया?
15. पृष्ठ संख्या 285 में होने वाले अंतिम अनुच्छेद को पढ़कर, अपनी टिप्पणी दीजिए। (AS_2)

अध्याय

20

हमारे समय में समाजिक आंदोलन

(Social Movements in Our Times)

आपने कई आंदोलन देखे होंगे, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया, कई समस्याओं को समझने का प्रयत्न किया, परिवर्तन लाने का प्रयत्न किया और उसके लिए सक्रिय रूप से अभियान चलाया। आपने भी इनमें से कुछ में भाग लिया होगा। आपके द्‌वारा भाग लिए गये या समाचार पत्रों में पढ़े गए ऐसे ही कुछ आंदोलन का पुनःस्मरण कीजिए। क्या समस्याएँ थी, कौनसे लोग प्रभावित हुए, वे क्या चाहते थे, किसने आंदोलनों का नेतृत्व किया, आंदोलन में भाग लेने के लिए किस प्रकार सहमत हुए, क्या आंदोलन में किसी प्रकार का भेद-भाव था, आंदोलन कैसे आगे बढ़ा और किस हद तक वे अपने उद्‌देश्य को प्राप्त कर सके?

पृष्ठ भूमि

20 वीं सदी के पहले अर्धशतक में संसार युद्‌धों, क्रांतियों, जर्मन के फासीवाद का उदय, सोवियत समाजवाद, पश्चिमी उदारवाद, राष्ट्रीय उदारवादी आंदोलन आदि के प्रभाव में था। लेकिन फिर भी 1950 के मध्य भारत, चीन, इंडोनेशिया, नाइजिरिया और इजिप्त के स्वतंत्र होने से संसार में एक नए युग का आरंभ हुआ। यह कई देशों के लिए आर्थिक विकास और समृद्‌धि का युग था, लेकिन कई देशों में तनाव की स्थिति थी और समाज का वह भाग जिसे लम्बे समय से समान अधिकार प्राप्त नहीं हो रहे थे, अपने अधिकार के लिए आगे बढ़े।

नागरिक अधिकार और 1960 के अन्य आंदोलन (Civil Rights and Other Movements of 1960s)

ऐसे ही आंदोलनों में से एक मुख्य आंदोलन अमेरिका नागरिक अधिकार आंदोलन था। यह अफ्रीकी-अमेरिकन या काले-अमेरिकनों के साथ समान व्यवहार और स्कूलों, बसों और सार्वजनिक स्थानों पर काले और गोरों के बीच अलगाव के नियम की अनुमति के विरुद्‌ध संघर्ष था और नियुक्ति, मकान और यहाँ तक कि मत देने के अधिकार में भी उनके साथ भेदभाव किया जाता था। 1960 में यह आंदोलन पूर्ण उत्कर्ष पर पहुँच गया था। यह अहिंसात्मक था और, भारी प्रदर्शन, मार्च, नागरिक-अवज्ञा (भेदभाव-कानून का शांतिपूर्ण ढंग से उल्लंघन) और भेदभाव पूर्ण सेवाओं (जैसे बस जहाँ काले और गोरों के बीच भेद भाव किया जाता था) का बहिष्कार। इसमें

चत्र 20.1 : बिल.सी. ऑफ एलिजाबेथ के द्‌वारा खींची गई तस्वीर एक्सफोर्ड एक काली लड़की जिसने 4 सितंबर 1957 में लिटिल रॉक पाठशाला में प्रवेश करने का प्रयास किया।

चत्र 20.2 : डॉ मार्टिन लूथर किंग - भाषण देते हुए।

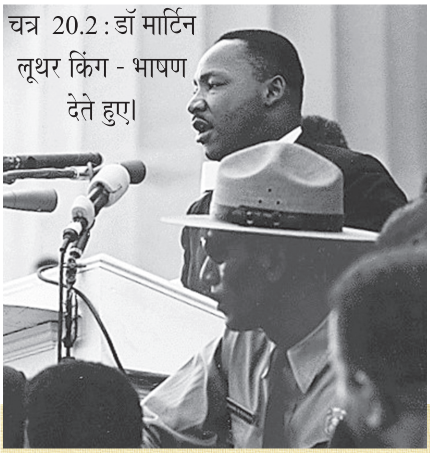

एक महत्वपूर्ण कार्य डॉ.मार्टिन लूथर किंग की अध्यक्षता में मांटेगोमेरी में कालों द्वारा वर्ष भर बसों का बहिष्कार करना था। इससे बस कंपनी को अत्यधिक हानि हुई और 1956 में कोर्ट द्वारा बसों में भेदभाव पर रोक लगा दी गयी। उसी समय पाठशालाओं में भेदभाव समाप्त करने के लिए एक शक्तिशाली आंदोलन चल रहा था। (काले और गोरे बच्चों को अलग-अलग पाठशाला जाना पड़ता था।) नागरिक अधिकार अधिनियम पास करने की माँग करते हुए दो लाख से भी अधिक लोग वाशिंगटन की ओर बढ़े। रोज़गार उत्पन्न कार्यक्रम, पूर्ण व भेदभाव रहित रोज़गार, अच्छा आवास, मत देने का अधिकार और पर्याप्त समावेशी शिक्षा जिसमें काले और गोरे लोग मिलकर अध्ययन कर सकते हैं, आदि अन्य माँगें भी रखी गयी। इसे डॉ. किंग ने अन्य लोगों को भाषण में कहा - ''मेरा एक सपना है....'' तत्पश्चात ये कानून पास किए गए और कई समय तक संघर्ष करने के पश्चात् इनमें से कई को प्रभावपूर्ण ढंग से लागू किया गया। यह संपूर्ण संसार में सुधार और परिवर्तन के लिए अहिंसात्मक सामाजिक आंदोलन चलाने के लिए एक प्रेरणा बन गया।

मेरा एक सपना है..

पाँच सौ साल पहले, एक महान अमेरीकी ने जिसकी प्रतीकात्मक छाया में आज हम खड़े है, मुक्ति घोषणा पर हस्ताक्षर किए। यह महत्वपूर्ण आदेश लाखों नीग्रो गुलामों के लिए एक जलती हुई मशाल के समान था, जो घृणापूर्ण अन्याय की लपटों में जल रहे थे... किंतु एक सौ वर्ष पश्चात भी नीग्रों की जिंदगी अलगाव और भेदभाव के बीच पंगु बनी हुई थी।.....

मेरा एक सपना है कि मेरे चार छोटे बच्चे एक दिन ऐसे देश में जियेंगे जहाँ उनकी पहचान रंग से नहीं बल्कि उनके चरित्र से की जाएगी.....

डॉ. मार्टिन लूथर किंग

- डॉ. किंग के इस प्रसिद्ध भाषण को पढ़ने की कोशिश कीजिए और उसके द्वारा अमेरीकी समाज के लिए बनाये गए आदर्शों और उसे प्राप्त करने के लिए बनायी गयी योजनाओं के बारे में एक निबंध लिखिए।

जैसे ही आंदोलन ने जोर पकड़ा, कई दृष्टिकोण सामने आए - कई लोग डॉ किंग से सहमत हुए कि सभी लोगों के लिए समानता शांतिपूर्ण तरीके से प्राप्त करना संभव है और आवश्यक कानून पास करने के लिए सरकार पर दबाव डालने लगे। फिर भी मॉलकम X जैसे अन्य कई लोगों की दृष्टि में कालों का एक अलग राष्ट्र था और सफेद लोगों के शासन से स्वतंत्रता पाने के लिए उन्हें संघर्ष करना चाहिए। उन्होंने यह भी महसूस किया कि शक्ति हासिल करने के लिए हथियार बंद विरोध जैसे सभी प्रकार के रास्ते अपनाने होंगे।

नागरिक अधिकार आंदोलन में भाग लेने वाले अधिकांश लोगों में काली औरतें थीं, जो यह समझती थी कि उनकी आवाज़ आंदोलन के भीतर भी नहीं सुनी जा रही है जो पुरुषों के आधिपत्य में था। यहाँ तक कि प्रसिद्ध वाशिंगटन मार्च में उन्हें बात करने का मौका भी नहीं दिया गया है। उन्हें यह महसूस हुआ कि औरतों को औरतों की समानता के लिए अधिकार माँगने की आवश्यकता है।

SCERT TELANGANA

ये सभी विरोधी बातें समानता के शक्तिशाली आंदोलन के निर्माण में अपने तरीके से सहायक बनी जिसने USA के आधुनिक इतिहास को आाकार प्रदान किया।

- नागरिक अधिकार आंदोलन की माँगों की सूची बनाओ और तालिका में लिखो और आपकी राय में इसके संभावित हल क्या है, बताओ।
- USA स्वयं को प्रजातंत्र का पक्षधर मानता है, किंतु, फिर भी उसने आखिरी शताब्दी के मध्य तक कुछ वर्ग के लोगों को पृथक रखा। हमारे संदर्भ में प्रजातंत्र को और भी समावेशी किस प्रकार बनाया जा सकता है? चर्चा कीजिए।
- एक आंदोलन में हम विभिन्न प्रकार की आवाज़ें (बातें) क्यों सुनते हैं? क्या आप उसमें अंतर पहचान सकते हैं।

USSR में मानव अधिकार आंदोलन (Human Rights Movements in the USSR)

USSR और USSR से प्रभावित पूर्वी यूरोप के अन्य अधिकार के देशों की तरह साधारण लोगों को निःशुल्क बहु-पार्टी चुनाव, बिना जाँच पड़ताल के निःशुल्क प्रेस या माध्यम, या विचार प्रकट करने की स्वतंत्रता या आंदोलन की आज्ञा नहीं देती थी। ये सरकारें निरंतर उनके कमज़ोर बनाने वाले षडयंत्रों से डरती थी और लोगों के सभी कार्यों में पूर्ण नियंत्रण रखती थी। क्योंकि लोग इस तरह के नियंत्रणों से तंग आ चुके थे, मानव अधिकार से संबंधित कई आंदोलन जैसे : विचार प्रकट करने की स्वतंत्रता, स्वतंत्र प्रेस का आंदोलन आदि, USSR और पूर्वी यूरोप के कई भागों में आरंभ हुए। हंगरी, चेकोस्लाविया और पोलैण्ड जैसे देशों में इस आंदोलन ने USSR से स्वयं को स्वतंत्र कराने की माँग का रूप ले लिया था। इनमें से कुछ आंदोलनों को USA और UK जैसे असाम्यवादी देशों का समर्थन भी मिल रहा था। मानव अधिकार के इन आंदोलनों के विभिन्न रूप थे। इनमें से कुछ का झुकाव सामान्य लोगों के लिए स्वतंत्रता की ओर था तथा अन्य अपने देश में विद्‌यामान समाजवादी प्रणाली को समाप्त करना चाहते थे। प्रसिद्‌ध लेखक अलेक्जेंडर सोलज्हेनिट्सिन और नाभिकीय वैज्ञानिक एंड्री सखारोव इस आंदोलन के महत्वपूर्ण नेता थे। इनके और अन्य आंदोलनों के प्रभाव के कारण राष्ट्रपति गोरबाचेव के रूप में एक नये नेता सामने आये जिन्होंने लोगों को स्वतंत्रता दिलाने के लिए ग्लैस्नोस्ट (Glasnost) नामक सुधार की प्रक्रिया आरंभ की।

- आपके विचार में USA और USSR की राजनैतिक प्रणाली की प्रकृति में क्या समानताएँ और विषमताएँ थीं? लोगों के अधिकारों के प्रति उनकी प्रतिक्रिया कैसी थी?

अनाभिकीय और युद्‌ध विरोधी आंदोलन(Anti-nuclear and Anti-war Movements)

1970 व 1980 में नये प्रकार के आंदोलन सामने आये युद्‌ध और नाभीकीय हथियार के विरुद्‌ध आंदोलन। अगस्त 1945 में संपूर्ण विश्व ने हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए नाभिकीय बम का आतंक देखा था। USA, USSR, जैसी महाशक्तियों के विद्‌यमान होने पर भी ब्रिटेन और फ्राँस ने नाभिकीय अस्त्र-शस्त्र के शस्त्रागार का निर्माण आरंभ किया और उसे अन्य शक्तियों को इसका उपयोग करने से रोकने का माध्यम बताया। ये दिन USA और

USSR के बीच गहन शीत युद्ध के दिन थे और अमेरिका का वियतनाम के साथ युद्ध भी चल रहा था। पूरा विश्व एक और विश्व युद्ध की आशंका से भयभीत था। यह डर था कि यदि एक और विश्व युद्ध हो गया और उसमें नाभिकीय हथियारों का उपयोग किया गया तो पृथ्वी पर से सारी मानव जाति का निशान मिट जाएगा। संसार के हज़ारों वैज्ञानिक और विद्वानों ने नाभिकीय हथियारों को समाप्त करने का प्रचार किया और USA और USSR को समझौता करने के लिए दबाव डाल कर हथियार दौड़ को समाप्त किया।

वियतनाम के झगड़े में यह अंदाजा लगाया गया कि बड़ी संख्या में कंबोडियन और लाओतिन के साथ-साथ कम से कम 8,00,000 से 30,00,000 तक वियतनामी सैनिक और नागरिक मारे गये। USA में किसी भी नागरिक की मृत्यु नहीं हुई किंतु बड़ी संख्या में सैनिक मारे गये और कई शारीरिक रूप से बाधित हुए। वियतनाम अपने विरोधी USA और फ्राँस की तुलना में अधिक वनजन्य व गरीब था। वियतनामी युद्ध में गोरिल्ला युद्ध की तकनीक का उपयोग करते थे। USA ने नापालम बम सहित रासायनिक बमों के नये शस्त्रगारों का निर्माण किया और संपूर्ण गाँव को नष्ट किया।

1970 के आरंभ में अधिक अमेरिकी सैनिक, यह सोचकर सीधे सादे लोग अमेरिका के लिए किसी भी प्रकार से हानिकारक नहीं हो सकते, वियतनाम से वापस आ गए। अधिक से अधिक अमेरीकी भी अपने बच्चों को दूर वियतनाम भेजने से नाखुश थे। इसीलिए वियतनाम युद्ध के विरुद्ध सामूहिक विरोध अमेरिका में फैल गया। इसने 1975 में US सरकार को

"हम नहीं जाएँगे"

अमेरिका में एक कानून था जिसके अनुसार सभी योग्य नागरिकों को छोटे अंतराल के लिए सेना में भर्ती होना आवश्यक था। वियतनाम युद्ध के समय हज़ारों नागरिकों ने वियतनाम में युद्ध करने के लिए सेना में भर्ती होने से इंकार कर दिया था। यह हार्वड क्रिमसन समाचार पत्र में छपा एक कथन है:

नीचे हस्ताक्षर करने वाले हम सभी प्रारूप काल के अमेरीकी आदमियों को हमारी सरकार हमें वियतनाम युद्ध में भाग लेने का आदेश दे सकती है। हमने इस युद्ध के इतिहास और प्रकृति का निरीक्षण किया है और इस निर्णय पर पहुँचे हैं कि हमारा युद्ध में भाग लेना हमारे अंतः करण की आज्ञा के विरुद्ध है।

इसीलिए हम संयुक्त राज्यों द्वारा वियतनाम से युद्ध की प्रक्रिया में भाग लेने से इंकार करते हैं। (कानून के अनुसार भी नागरिकों के लिए ऐसा करना आवश्यक है।) इस कथन पर हस्ताक्षर करने का हमारा इरादा अन्य प्ररूप संबंधी लोगों के साथ मिलकर रहना है जिसने हमारे, इस युद्ध के व्यक्तिगत नैतिक इंकार को प्रभावपूर्ण राजनैतिक विरोध में बदलने के हमारे दृढ़ निश्चय का साथ दिया।

कुछ लोग समझते थे कि ये लोग देश-भक्त नहीं है और कुछ समझते थे कि उन्होंने अन्यायसंगत युद्ध में भाग लेने से इंकार कर न्याय किया है। इन दोनों दृष्टिकोणों से कक्षा में चर्चा कीजिए और दोनों पक्षों के तर्क पर तथा अपने स्वयं के दृष्टिकोण पर एक संक्षिप्त नोट लिखिए।

युद्ध समाप्त करने और वियतनाम छोड़ने के लिए विवश किया। इस अभियान की सफलता ने संसार में शांति आंदोलन को प्रेरित किया।

वियतनाम युद्ध के समाप्त होने के पश्चात नाभिकीय शास्त्र दौड़ अधिक तीव्र हो गई क्योंकि अधिक से अधिक देश नाभिकीय शस्त्र इकट्ठा करने के लिए एक-दूसरे से स्पर्धा कर रहे थे। इन हथियारों का उत्पादन करने वाली कंपनियाँ (सैन्य-औद्येगिकी कॉम्प्लेक्स कहलाती थी।) और सरकार सामान्य लोगों में युद्ध का भय उत्पन्न करने का प्रयत्न करने लगी थी ताकि वे टैक्स भुगतान कर्ताओं का धन नाभिकीय शस्त्रों पर खर्च करने में सहायता प्रदान करें। धीरे-धीरे कई लोग, मुख्य रूप से यूरोप के लोगों ने समझ लिया कि युद्ध व्यापारिक हैं और शस्त्र दौड़ संसार को और अधिक असुरक्षित बनाती है और सभी देशों के लिए विनाशकारी युद्ध की संभावना को बढ़ाती है, उनके लिए भी जो प्रत्यक्ष रूप से युद्ध में शामिल नहीं है। सरकार की नीतियों के विरुद्ध वृहद् विरोध हुआ जिससे सरकार से अन्य सरकारों के साथ नाभिकीय शस्त्र कम करने और शांति के लिए कार्य करने का सौदा करने की माँग की गयी।

इस दबाव के परिणामस्वरूप अस्त्र दौड़ के मुख्य प्रतिस्पर्धी USA और USSR ने अपने अस्त्रागार (सामरिक अस्त्र नियंत्रण बातचीत) (SALT - Strategic Arms Reduction Treaty) को कम करने की बातचीत आरंभ की जो असफल हुई। अंत में 1991 में एक संधि पर हस्ताक्षर किये गये जो सामरिक शस्त्र न्यूनीकरण संधि (START) के नाम से जानी जाती है। START इतिहास में अस्त्र नियंत्रण संधियों में सबसे बड़ी और जटिल संधि है। 2001 के अंत में इसके अंतिम कार्यान्वयन के परिणाम स्वरूप उस समय स्थित नाभिकीय हथियारों के व्यूह में 80 प्रतिशत की कमी आई। संधि पर हस्ताक्षर करने के कुछ समय पश्चात ही USSR समाप्त हो गया और उसके स्थान पर नये रूसी राज्य का निर्माण हुआ। इसके साथ ही लंबे

Fig 20.3: a. वियतनाम युद्ध विरोधकर्ता b. महिला प्रदर्शनकारी पेंटागन पर सुरक्षा पर तैनात सैनिक पुलिस कर्मी को फूल प्रदान करते हुए। इन चित्रों के विचारों पर चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

- शस्त्रीकरण के प्रति विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएँ क्या थी?
- सरकारों द्वारा अकेले एक दूसरे के साथ नीतियाँ निश्चित करने के बजाय यदि विभिन्न देशों के लोग एक दूसरे से मिलेंगे तो युद्ध की संभावना कम होगी। क्या आप इस कथन से सहमत है? अपने उत्तर का कारण बताइए।
- देशों के लोगों को पर्यावरणीय मुद्दे किस प्रकार प्रभावित करते हैं जिनकी नाभिकीय संयंत्र की स्थिति निश्चित करने में और फैक्ट्ररियों के प्रदूषण में कोई भूमिका नहीं होती। इस स्थिति का सामना हम कैसे कर सकते हैं?

शीत युद्ध और महाविपत्ति कारी विश्व युद्ध के निरंतर भय का भी अंत हुआ। इसका अर्थ यह नहीं था कि देशों के बीच युद्ध या हिंसा समाप्त हो गयी है क्योंकि हमने पूर्वी यूरोप, ईराक और अफगनिस्तान में विनाशकारी युद्ध देखे हैं।

USSR के अंतिम चरण में उसके चेरनौबिल के नाभिकीय केंद्र में एक बड़ी दुर्घटना हुई जिसके कारण चेरनौबिल के कर्मचारी बड़ी संख्या में मारे गए, लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण, यूरोप के कई देशों को मिलाकर एक बहुत बड़े क्षेत्र के वातावरण का दूषित होना था। इसके प्रभाव ने संसार के लोगों में शांति या युद्ध के लिए नाभिकीय शक्ति के खतरे के बारे में जागरूकता उत्पन्न की। इससे युद्ध विरोधियों को वातावरण सुरक्षा से संबंधित लोगों के साथ मिलने में सहायता मिली।

वैश्वीकरण, सीमांत लोग और पर्यावरणीय परिवर्तन (Globalisation, marginalised people and environmental movements)

1990 से संसार में आर्थिक और राजनैतिक परिवर्तन हुए, जिसे 'वैश्वीकरण' या 'नवीन-उदारवाद' के नाम से जाना गया। इससे अल्पसुविधा प्राप्त और गरीबों के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। असंगठित विभागों में कार्य करने वाले जनजाति के लोग, गरीब किसान, भूमिहीन मजदूर, महिलाएँ, शहरों के गरीब और औद्योगिक मजदूर अधिक प्रभावित हुए। ये वही लोग थे जो औपचारिक शिक्षा या पर्याप्त पोषण और स्वास्थ्य की पहुँच से दूर थे। परिणाम स्वरूप इनकी पहुँच नये अधिक सुविधाजनक वेतन वाली नौकरियों या कानूनी या अन्य संवैधानिक सुविधाओं तक नहीं थी।

अंतिम कुछ दशकों में जनजाति और सीमांत किसानों को वाणिज्यिक किसानों, खान निगमों, बाँध परियोजना आदि के द्वारा धमकाया गया। क्योंकि अधिकतर कंपनियाँ दूर ग्रामीण क्षेत्रों में खनिजों, असाधारण पौधों, पशुओं और जल के कम स्त्रोत पाती थी, कृषि और जनजातीय जनसंख्या को उनके सांस्कृतिक क्षेत्रों से बाहर निकालने में तीव्र वृद्धि हुई। इसके परिणाम स्वरूप समुदाय नये क्षेत्रों में फैल गये और जनजातीय संस्कृति का विनाश हुआ। इसके कारण वे समाज के अत्यधिक पिछड़े विभाग बनकर रह गये। विकास की ये सभी प्रक्रियाएँ मिलकर प्राकृतिक स्त्रोतों के लिए घातक बन थी। जिससे पर्यावरण आंदोलन की स्थिति में बढ़ोत्तरी हुई जिससे सीमांत लोगों की क्रोधित आवाज़ को इस विकास कामों के विनाशकारी और हिंसात्मक प्रकृति के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया। ये आंदोलन एक दृष्टिकोण ढूँढ़ रहे थे जो अलग प्रकार का था।

SCERT TELANGANA

यूरोप में हरित शांति आंदोलन (Greenpeace Movement in Europe)

यह आंदोलन मुख्य रूप से 1971 में अमेरीका के अलास्का के समीप जल के भीतर नाभिकीय परीक्षण के विरुद्ध किया गया। कार्यकर्ता विरोध प्रदर्शन के लिए एक छोटे जहाज में बैठकर परीक्षण स्थल के लिए निकल पड़े। इस जहाज का नाम ''हरितशांति'' रखा गया और तत्पश्चात यह आंदोलन का नाम बन गया। आज यह चालीस देशों में फैल चुका है और इसका मुख्यालय एम्सटर्डम (हालैण्ड) में है तथा यह एक महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय 'गैर-सरकारी संगठन' बन गया।

पिछले कुछ दशकों में वैज्ञानिकों ने यह खोजा है कि प्रदूषण से वातावरण में सुरक्षात्मक ओज़ोन परत नष्ट हो जाती है जो सूर्य की घातक किरणों को शोषित करने के लिए महत्वपूर्ण है। प्रदूषण के कारण पृथ्वी का सामान्य तापमान नियमित रूप से बढ़ रहा है। यह प्रभाव ध्रुवीय हिम शिखरों - दो ध्रुवों में हिम के रूप में एकत्रित जल, के पिघलने का कारण है। जैसे ही बर्फ़ पिघलकर महासागर में मिलती है, महासागरों और समुद्रों में जल का स्तर बढ़ जाता है जिसके कारण संसार भर के तटीय क्षेत्रों में भूमि जलमग्न हो जाती है। बंगलादेश, श्रीलंका, मॉरीशस, भारत और इंडोनेशिया जैसे देशों को, जहाँ बड़ी संख्या में लोग समुद्र तटों पर रहते हैं, बाढ़ और जलमग्नता की सघन समस्या का सामना करना होगा। यहाँ तक की महाद्वीप के भीतरी भागों में रहने वाले लोग भी नहीं बच सकते हैं क्योंकि ग्लोबल वार्मिंग के कारण अनियमित वर्षा (अमौसमी वर्षा, अधिक वर्षा और सूखा) और फसल की असफलता होगी। दूसरे शब्दों में भूमंडलीय जलवायु उन देशों को प्रभावित करती है जिसकी जनसंख्या मुख्य रूप से कृषि पर आधारित होती है।

- हरितशांति (Green peace) आंदोलन की वेबसाइट देखिए। (http://www.greenpeace.org/international) उनके द्वारा विरोध किए गए मामलों का पता लगाने और यह जानने के लिए कि लड़ाई के लिए उन्होंने किन तरीकों का उपयोग किया। इस आंदोलन के वादविवाद और विवादास्पद स्थिति का भी पता लगाइए।

हरितशांति ने कई देशों में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का समर्थन किया। इसका उद्देश्य ''अपनी पूर्ण विविधता में जीवन को पोषित करने की पृथ्वी की योग्यता को सुनिश्चित करना हैं।'' कई वर्षों में आंदोलन ने चिरस्थायी (sustainable development) विकास का उपाय किया, वह विकास जो लंबे समय से पर्यावरण को संभाले हुए है और विकसित संसार और अविकसित संसार दोनों के सभी लोगों के लिए न्याय संगत भी है।

भोपाल गैस त्रासदी से संबंधित आंदोलन

(Bhopal Gas Disaster related movements)

1984 में भोपाल में हुई बड़ी त्रासदी के बारे में आपने पढ़ा होगा। हज़ारों लोग जीवन से हाथ धो बैठे और कई अभी भी इसके दुष्प्रभाव से पीड़ित है। यह संभवत: संसार की सबसे खराब औद्योगिक त्रासदी है। आरंभ से ही भोपाल के लोग चार मुख्य माँगों के लिए संघर्ष कर रहे हैं : पीड़ितों के लिए उचित चिकित्सा, क्योंकि कंपनी एक मल्टीनेशनल कंपनी है इसीलिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर के आधार पर पर्याप्त क्षतिपूर्ति, बहुराष्ट्रीय कंपनी के प्रबंधकों पर त्रासदी का अपराधिक उत्तरदायित्व डालना, और अंतिम चरण है भविष्य में ऐसी त्रासदियों को रोकना।

SCERT TELANGANA

चित्र 20.4 : भोपाल गैस त्रासदी के मृतकों को श्रद्धांजलि देना

कुछ हद तक वे इसमें सफल हुए, फिर भी वे मुख्य माँगों को प्राप्त करने के काफी दूर थे। भोपाल में दवाइयों की सुविधाएँ प्रदान करने के लिए अत्यधिक धन खर्च हुआ, फिर भी पीड़ित उसके प्रभाव को सहन कर रहे थे, अंतराष्ट्रीय स्तर के आधार पर क्षतिपूर्ति नहीं की गयी थी और वे भी सभी प्रभावित लोगों को ठीक से नहीं दी गयी थी। सरकार कंपनी के प्रबंधकों पर, जिनकी लापरवाही के कारण दुर्घटना घटी, अभियोग चलाने और दंड देने में असफल रही। आज हमारे पास बेहतर कानून हैं फिर भी हमारे पास अब भी उचित नीति और पर्याप्त निष्पक्ष निरीक्षण यंत्र नहीं है जो भविष्य में ऐसी त्रासदी होने की संभावना को रोक सके। इसके विरुद्ध विरोध अधिक जटिल था क्योंकि कंपनी स्वयं USA में विद्यमान थी। कंपनी के द्वारा उत्पन्न प्रदूषण से प्रभावित फैक्टरी के मज़दूरों और महिलाओं के समान समस्याओं के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए आज लोगों को अंतर्राष्ट्रीय कानून का उपयोग करने की आवश्यकता है। विश्व के कई लोगों ने कंपनी के द्वारा बनाये गये उत्पादनों का बहिष्कार किया। आज भी सामाजिक एकीकरण चालू है, जब डॉव (Dow) कंपनी ने लंदन में ओलंपिक खेल आयोजित किए तो संसार भर के लोगों ने उसके विरुद्ध याचिका दायर की। संसार के बहु संगठनों ने ओलंपिक समूह की डोव (Dow) के साथ अनैतिक संधि पर उँगली उठाई।

पर्यावरणीय आंदोलन (Environmental movements)

हमारे देश में पर्यावरणीय आंदोलन का आरंभ 1970 में प्राकृतिक वनों की सुरक्षा के लिए आधारित (grass root) आंदोलन के रूप में हुआ। ऐसा ही आंदोलन 'चिपको आंदोलन' था, जिसका अध्ययन आपने 11 वें अध्ययन में किया है।

नर्मदा नदी पर बाँध के विरूद्ध आंदोलन (Movements against dams on the Narmada river)

1950 से भारतीय विकास योजना का मुख्य भाग विशाल 'बहु-उद्देशीय बाँधों' का निर्माण था। इनमें से कुछ बड़े बाँध भाखरा-नाँगल, हीराकुड और नागार्जुनसागर आदि है। आरंभ में लोग बाँधों से बहुत भयभीत हुए, ये बड़ी मात्रा में जल का संग्रहण कर सकते थे, ये बड़े भू-भाग की सिंचाई कर सकते थे, ये बडी मात्रा में बिजली का उत्पादन कर सकते थे, बाढ और सूखे पर नियंत्रण या

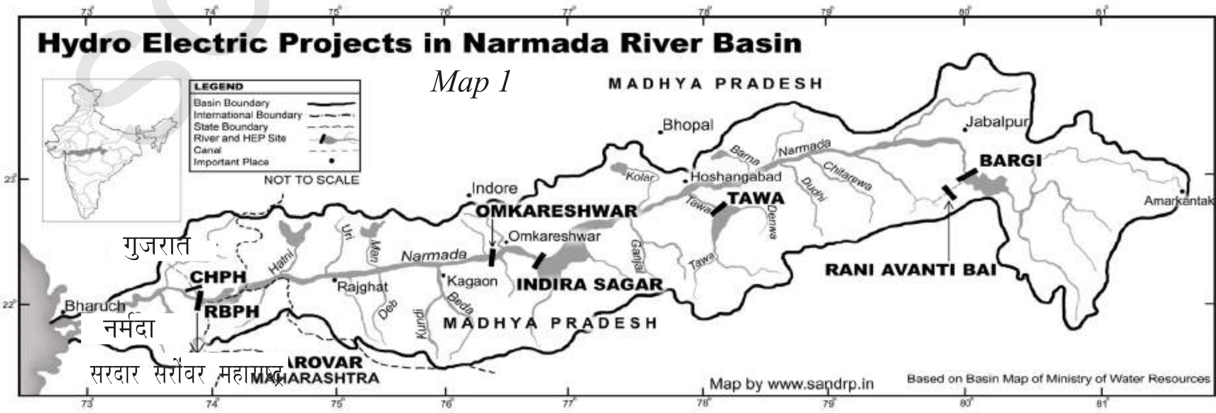

बचाव कर सकते थे। परंतु किसी ने नहीं पूछा कि जहाँ बाँध बनाये गये हैं उन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों, पेड़-पौधों, खेतों और पशुओं का क्या हुआ? हज़ारों पेड़ और पशुओं तथा कई एकड़ उर्वरक खेत तथा लोग जिन्हें बाँधों के निर्माण के लिए स्थान से हटाया गया, उनकी पूर्ण रूप से उपेक्षा की गयी। उनके पास जाने के लिए कोई स्थान नहीं था और उन्हें दयनीय स्थिति में बिना किसी क्षतिपूर्ति के हटाया गया। अधिकतर लोगों के लिए बड़े बाँधों द्वारा देश को होने वाले फायदे के समक्ष यह बहुत ही कम कीमत थी। शीघ्र ही लोगों ने यह भी प्रश्न पूछना आरंभ किया कि सभी खर्चों वनों खेतों गाँवों के संदर्भ में होने वाली क्षति आदि की जिम्मेदारी लेने पर भी बाँधों के लिए किये गये निवेश के पर्याप्त परिणाम न निकलने पर क्या नतीजा होगा? क्योंकि बाँध का खर्च बहुत अधिक था और मूल्य में बढोत्तरी और निर्माण में देरी होने पर यह और भी बढ़ जाता था, दूसरे, वे प्रारंभ में सिंचाई के लिए निर्धारित भूमि की सिंचाई या पूर्व-नियोजित आधार पर बिजली का उत्पादन कभी-कभी ही पूरा करते थे। इसका कारण यह था कि बाँधों में एकत्रित किये जा सकने वाले जल की मात्रा इंजीनियरों की कल्पना से कम थी। जब सरकार ने भारतीय इतिहास के अत्यधिक महत्वपूर्ण नदी घाटी परियोजना के अंतर्गत नर्मदा नदी पर कई बड़े और छोटे बाँधों के निर्माण का प्रस्ताव रखा तब ऐसे कई प्रश्न सामने आए।

परियोजना के कारण जिन लोगों को विस्तापित होना पड़ा, उन्होंने उचित क्षतिपूर्ति की माँग की, केवल जिनकी स्वयं की भूमि थी उनको ही नहीं, बल्कि जो वहाँ रहते थे उनको भी क्षतिपूर्ति दी जाय। उन्होंने खोयी हुई भूमि के बदले भूमि तथा उचित पुनर्वास की माँग की तथा बाँध के अंतर्गत क्षतिग्रस्त वन की क्षतिपूर्ति के लिए वृक्षारोपण की भी माँग की। शीघ्र ही लोगों ने दो बातों का अनुभव किया, वह यह कि वास्तव में हानि की क्षतिपूर्ति के लिए पर्याप्त भूमि उपलब्ध नहीं है और यह विस्थापित सभी लोगों को उचित रूप से पुनर्वासित करना वास्तव में संभव नहीं है। दूसरे, लोगों ने यह समझना आरंभ कर दिया कि समस्या क्षतिपूर्ति या पुनर्वास की नहीं है बल्कि विकास के एक दोषपूर्ण विचार की है। वह विकास जो प्राकृतिक स्त्रोत के गैर जिम्मेदार उपयोग पर आधारित है। जो जनजाति समुदाय और कृषि की कीमत पर उद्योगों और वाणिज्यिक खेतों की स्थापना का केवल मार्ग प्रशस्त करती है। यह किसी भी प्रकार से गरीब किसानों और जनजाति के लोगों के जीवन में सुधार लाए बिना, उनमें से केवल अकुशल हस्त कारीगर बनाती है।

आंदोलन के नेता ने बाँधों के निर्माण का विरोध करने का निश्चय किया। 11 वें अध्याय में आपने बाबा महालिया का पत्र पढ़ा है। जो बाँध के विरोध में नर्मदा घाटी में नर्मदा बचाओ आंदोलन (NBA) का एक भाग था जो सुसंगठित जन आंदोलन था।

आरंभ में वर्ल्ड बैंक से कर्ज़ लिए गए धन से SSP का निर्माण किये जाने की आशा थी। तीव्र विरोध, एकीकरण, प्रयाण, भूख हड़ताल और एक अंतर्राष्ट्रीय प्रचार के पश्चात वर्ल्ड बैंक ने सहायता रोकने का निश्चय किया।

चित्र. 20.5 विस्थापन के विरुद्ध नर्मदा घाटी में विरोध

SCERT TELANGANA

सरदार सरोवर बाँध के निर्माण को रोकने के प्रयास में असफल होने के बावजूद भी NBA प्रत्येक को विकास की प्रकृति के बारे में सोचने के लिए मजबूर करने में सफल हुआ - चाहे वह गरीब हो या अमीर और शक्तिशाली, किसी के पक्ष में भी हो, यह प्रत्येक को बड़ी निर्माण योजनाओं की उपयोगिता के बारे में पुनर्विचार करने पर मजबूर करती है, जो प्रकृति में बड़े स्तर पर हस्तक्षेप करती है, इसने सरकार को लोगों के विस्थापन से प्रेरित विकास (development induced displacement) के लिए पर्याप्त और सम्माननीय क्षतिपूर्ति प्रदान करने के लिए सोचने पर मजबूर किया।

- क्या किसानों और जनजाति के लोगों को बाहर निकाले बिना उद्योगों और खानों का निर्माण असंभव है? इस मामले पर अपने परिवार और पाठशाला में चर्चा कीजिए।

NBA आंदोलन स्वयं में कई प्रकार के आंदोलनों का मिश्रण है जैसे देशज लोगों का आंदोलन, नवीन उदारवादी नीतियों के विरुद्ध आंदोलन, अपनी भूमि पर अधिकार के लिए किसानों का संघर्ष क्योंकि बाँध, शहरीकरण, उद्योग, खान और वनों के लिए उनकी भूमि जब्त करने के प्रयत्न किये जा रहे थे।

भारतीय पर्यावरण की स्थिति (CSE) STATE OF INDIA'S ENVIRONMENT

भारत में पर्यावरणीय और विकास के मामलों का अध्ययन करने के लिए 1980 में अनिल अग्रवाल के द्वारा CSE की स्थापना की गयी। 1982 में भारतीय पर्यावरण की स्थिति की नागरिक रिपोर्ट नामक प्रसिद्ध श्रेणी के प्रकाशन के साथ इसका आरंभ हुआ और ये रिपोर्ट आज देश के सामने आये विभिन्न पर्यावरणीय मामलों के लिए एक मान्य संदर्भ बन गयी। उसके द्वारा अध्ययन किये गए मामलों और उसके कार्यों के बारे में जानने के लिए उसकी वेबसाइट (http://www.cseindia.org) पर जाइए।

निशब्द घाटी आंदोलन (Silent Valley Movement) (1973-85)

जब केरल में पश्चिमी घाट में निशब्द घाटी में बहने वाली दो नदियों पर बाँध के निर्माण का प्रस्ताव रखा गया, तब कई शिक्षित लोगों ने यह अनुभव किया कि यह घाटी में रहने वाला पशुओं और पौधों की असाधारण जातियों के लिए घातक हो सकता हैं। इसमें शेर की पूँछ वाले मैक (Lion Tailed Macaque) एक प्रकार का बंदर जैसे खतरनाक महत्वपूर्ण जीव भी शामिल है। धीरे-धीरे बाँधों और निशब्द घाटी को बचाने के लिए एक महत्वपूर्ण आंदोलन विकसित हुआ। सामान्य लोगों में विज्ञान और अधिगम के प्रचार के लिए कार्यरत केरल शास्त्र साहित्य परिषद (KSSP) नामक संगठन के द्वारा राज्य भर के लोगों को एकीकृत किया गया। वे न्यायालय गये और परियोजना क्षेत्र में काटे जाने पेड़ों के विरुद्ध अपील की और केरल के हाई कोर्ट ने पेड़ों को काटने पर रोक लगा दी। प्रचंड विरोध को दृष्टि में रखते हुए सरकार ने अंत में बाँध परियोजना बंद कर दी और 1985 में निशब्द घाटी को नेशनल पार्क में परिवर्तित कर दिया।

Fig. 20.6

चित्र 20.6 : यहाँ के वनों में झींगुर (cricket) नहीं होते इसीलिए वन 'निशब्द' होते हैं। शेर की पूँछ वाले मैक (Lion tailed macaque) और जीव और पक्षियों की अन्य अनोखी जातियाँ यहाँ विद्यमान हैं।

SCERT TELANGANA

मेधा पाटकर के साथ साक्षात्कार

नीचे दिए गए साक्षात्कार में उनकी एक नेता मेधा पाटकर ने 2010 में संगठन के बारे बातचीत की है।

अभी इस संघर्ष को जारी रखने से क्या कुछ फायदा है जबकि गुजरात सरकार ने सब कुछ उसकी इच्छा के अनुसार ही किया है?

''जब तक लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होगी तब तक संघर्ष खत्म नहीं हो सकता।''

यद्यपि सरकार द्वारा घोषित नीति और योजना प्रगतिशील और भूमि-आधारित दिखायी दी लेकिन यह स्पष्ट था कि यह उन लोगों को भूमि की गारंटी नहीं दे सकती जिन्होंने अपना रोज़गार खोया था। पर्यावरणीय परिमाण अभी तक उसके अनुसार नहीं थे। पास किए गए प्रस्ताव में बतायी गई विभिन्न परिस्थितियों और नीतियों के विरुद्ध बाँध की ऊँचाई बढ़ाना अनुचित है।

Fig 20.7

यह दर्शाने के लिए संघर्ष जारी रहेगा कि प्रकृति-आधारित समुदायों के आवास को समाप्त करके और बड़े सामाजिक, पर्यावरणीय और आर्थिक लागत से जो थोड़ा बहुत प्राप्त किया गया वह वास्तव में कच्छ के जरूरतमंद लोगों को नहीं पहुँच रहा है बल्कि गुजरात के निगमों और बड़े शहरों को पहुँच रहा है। NBA इस नमूने में परिवर्तन चाहता है। विस्थापन, विनाश और असमानता के विरुद्ध संघर्ष भी विकास और पुनःनिर्माण के कार्यों के साथ जारी रहेगा क्योंकि यह केवल नर्मदा घाटी में ही नहीं बल्कि पूरे देश में चलाया जा रहा है।''

- सामाजिक आंदोलन द्वारा उपयोग में लायी गयी विभिन्न नीतियाँ कौनसी थीं?
- आंदोलन के लोगों ने पुनर्वास के आश्वासनों की प्रक्रिया को किस प्रकार देखा?

सामाजिक न्याय और मानव अधिकारों के लिए महिलाओं का आंदोलन
(Movement of Women for social justice and human rights)

हमने पिछली कक्षाओं में महिलाओं के साथ असमान व्यवहार और उनके द्वारा समान अधिकार और अवसर, वैयक्तिक सुरक्षा तथा न्याय के लिए किये गये संघर्ष के बारे में पढ़ा है। थोड़े समय पूर्व में महिलाएँ कई महत्वपूर्ण सामाजिक आंदोलनों में अग्रणी थी। इसे ठीक से समझने के लिए यहाँ हम दो विशिष्ट उदाहरण लेते हैं - आँध्र प्रदेश का (anti Arrack) आंदोलन और मणिपुरी महिलाओं का सैन्य बल की विशेष शक्तियों के विरुद्ध आंदोलन। उत्तर पूर्वी राज्यों के लोगों के विरुद्ध इन विशेष शक्तियों का दुरुपयोग किया गया था।

अडवुलु एकमैते (Adavallu Ekamaite)

''यह एक कहानी नहीं है। यह एक सायंकाल पाठशाला में पढ़ने वाली महिलाओं की उपलब्धि है।'' हमारा गाँव दुबागुंटा है। हम वेतन प्राप्तकर्ता है। हम भूमि से सोना निकालते हैं। लेकिन हमारी मेहनत की कमाई ताड़ी और शराब (Arrack) में खर्च हो जाती है। जब हमारे

आदमियों के पास धन नहीं होता था तो वे शराब (arrack) के लिए चावल, घी या कुछ भी बेच देते थे। उनके हाथ में जो भी वस्तु आती थी वे उसे ले जाते थे। पीने के अलावा वे हमें गाली देते, हमसे झगड़ा करते, हमारे बच्चों को मारते थे। उन्होंने हमारी रोजमर्रा की जिंदगी को दुखी बना दिया था। तब हमने बाल-पुस्तिका में सीतम्मा की कहानी पढ़ी। इसने हमें सोचने पर मजबूर किया। उसकी मौत के लिए कौन उत्तरदायी है? तब हमने सरपंच से शराब (Arrack) की दुकानें बंद करने के लिए कहा। लेकिन हम सफल नहीं हो सके।

इसीलिए अगले दिन, हमारे जैसे कई सौ लोग गाँव के बाहर तक गए और ताड़ी की गाड़ी रोकी। हमने मालिक से शराब फेंक देने के लिए कहा। हमने कहा कि उसके नुकसान की भरपाई के लिए हम सभी एक एक रूपये का अंशदान देंगे। वह भयभीत हो गया। उस दिन से हमारे गाँव में कोई ताड़ी नहीं आयी। जब शराब लेकर एक जीप गाँव में आयी तो हमने उसे घेर लिया और मालिक को चेतावनी दी कि हम मजिस्ट्रेट से शिकायत कर देंगे। इससे वह ऊपर से नीचे तक काँप गया। उसने अपनी दुकान बंद कर दी। अब हम में आत्मविश्वास आगया। हमने यह अनुभव किया कि यह जीत केवल शिक्षा द्वारा ही संभव हुई है। इस वर्ष किसी ने भी शराब की नीलामी में हिस्सा लेने की हिम्मत नहीं की।''

यह घटना 1992 में घटी और यह केवल एक ही घटना नहीं थी। जैसे ही समाचार फैला अन्य गाँवों की महिलाओं ने भी अपने गाँवों में शराब का विक्रय रोक दिया। साथ ही नेल्लूर जिले के कलेक्टर द्वारा शराब के ठेके की वार्षिक नीलामी को रोकने के लिए हजारों लोगों ने कूच किया। कलेक्टर ने नीलामी छः बार स्थगित की और अंत में नीलामी रद्द कर दी गयी।

अन्य क्षेत्रों में महिलाओं ने शराब की दुकानों के विरुद्ध रैली निकाली और धरने दिए और दुकानें बंद करने का प्रयत्न किया। उन्होंने दुकानों में माल के संचय या ग्राहकों को शराब खरीदने से रोक कर शराब की बिक्री को रोकने की कोशिश की। शराब के जिन दुकानदारों ने अपनी दुकानें बंद करने से इंकार किया उन्हें धरने, दुकान में जमा किए हुए शराब के पैकटों को बाहर फेंकना या शराब में आग लगा देना आदि का सामना करना पड़ा। कई गाँवों में महिलाओं ने रुकावट डालने वाले आदमियों की मूँछे या सर मुँडा दिए, या उन्हें गधे पर बैठा कर गाँव में भी घुमाया। साथ में, पुरुषों को प्रायः मंदिर में शराब न पीने की शपथ भी लेनी पड़ती थी। असंख्यक मीटिंगों और राज्य भर में महिलाओं द्वारा विरोध के पश्चात अक्तूबर 1993 में पूर्ण निषेध लगा दिया गया।

ये महिलाएँ हमारे समाज के गरीब विभाग, दलित वर्ग की थी। जो अपने पतियों और अन्य पुरुषों की बढ़ती हुई शराब की लत से अत्यधिक परेशान थी। इनमें से कई महिलाओं ने साक्षरता कक्षाओं में जाना आरंभ कर दिया था और वहाँ प्रायः इस समस्या पर चर्चा करती थी। ये कक्षाएँ उन्हें अपने जीवन के बारे में चर्चा करने और संबंधों का जाल बनाने का स्थान बन गयी। जैसे ही आंदोलन आरंभ हुआ इसके अनुभव शीघ्र ही साहित्यिक पुस्तकों द्वारा राज्य की अन्य महिलाओं तक पहुँच गए। ये पुस्तकें राज्य के सभी जिलों में महिलाओं द्वारा पढ़ी जाती थीं। और सबसे अधिक पिछड़े विभाग की महिलाएँ शराब निर्माताओं और विक्रयकर्त्ताओं की शक्तिशाली और हिंसात्मक चाल का सामना कर सकी। इन निर्माताओं और विक्रयकर्ताओं के पास केवल बहुत सारा धन और मानवीय शक्ति ही नहीं बल्कि राजनैतिक शक्ति भी थी।

आज फिर स्थिति बदली हुई है और शराब (arrack) की दुकानें फिर से खुल गयी हैं। इससे यह पता चलता है कि केवल निरंतर सतर्कता और कार्यों से ही ऐसे आंदोलनों के लाभों को सुरक्षित रखा जा सकता है।

- पश्चिमी बंगाल (नंदीग्राम), ओडिसा (नियमागिरी) और आंध्रप्रदेश (पोलावरम, सोमपेट आदि) के ऐसे तत्कालीन संघर्षो के बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए। ऐसे प्रत्येक केस में संघर्ष की मुख्य विशेषता को दर्शाता हुआ एक पोस्टर तैयार कीजिए।

मानव अधिकार के लिए सामाजिक एकीकरण (Social mobilisation on human rights)

अब हम देखेंगे कि किस प्रकार उत्तर पूर्वी भारत में मणिपुर की महिलाओं ने कानून के विरुद्‌ध संघर्ष किया। जो सैन्य बलों को अपने कार्यों की न्यायिक जाँच की किसी भी प्रक्रिया के बिना लोगों को दबाने की सहमति देता था। (अर्थात् लोग सैन्य बलों के कार्यों को कानूनी न्यायालय में चुनौती नहीं दे सकते थे।)

मानव अधिकार के कुछ अनुच्छेदों की सूची नीचे दी गयी है। इसे दो बार पढ़िए। पहले पूरा खण्ड पढ़िए और सभी लोगों के लिए उपलब्ध मानव अधिकारों को नोट कीजिए। तत्पश्चात नीचे दिए गए खण्ड में अनुच्छेद और पंक्ति संख्या लिखिए जो आपके विचार में हिंसा से संबंधित है या मानव अधिकार के प्रबंध के संबंध में असहमत है। (प्रत्येक सूचना जो अंकित नहीं की जा सकती है उन्हें रिक्त छोड़ दीजिए।)

अनुच्छेद 3: प्रत्येक व्यक्ति को जीवन, स्वतंत्रता और सुरक्षा का अधिकार है। अनुच्छेद ____ पंक्ति ____

अनुच्छेद **5:** किसी भी व्यक्ति को पीड़ा पहुँचाना या निर्दयता से पेश आना, अमानुषिक या असम्माननीय व्यवहार करना या दण्ड देने का अधिकार नहीं है। अनुच्छेद ____ पंक्ति ____

अनुच्छेद **7:** कानून के समक्ष सभी समान है और बिना किसी भेद-भाव के कानून के द्‌वारा समान सुरक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। अनुच्छेद ____ पंक्ति ____

अनुच्छेद **9:** किसी को भी गिरफ्तार करने, शक करने, या देश से निकालने का अधिकार नहीं है। अनुच्छेद ____ पंक्ति ____

अनुच्छेद **10:** प्रत्येक को मेले में या अपने स्वयं के अधिकारों और कर्तव्यों को जानने के लिए किसी स्वतंत्र और पक्षपातरहित न्यायालय की सार्वजनिक सुनवायी में जाने का समान अधिकार है। अनुच्छेद ____ पंक्ति ____

अनुच्छेद **12:** किसी को भी अन्य के निजी, परिवारिक, घर या पत्राचार में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है और न ही इसकी प्रतिष्ठा और कीर्ति पर हमला करने का अधिकार है। इस प्रकार के हस्तक्षेप या हमले के विरुद्‌ध प्रत्येक को कानून से सुरक्षा पाने का अधिकार है। अनुच्छेद ____ पंक्ति ____

अनुच्छेद **13:** (1) प्रत्येक को राज्य (यहाँ राज्य का अर्थ देश) की सीमा के भीतर आने-जाने या निकास करने की स्वतंत्रता का अधिकार है। अनुच्छेद ____ पंक्ति ____

(2) प्रत्येक को किसी भी देश से बाहर जाने, अपने स्वयं के देश को भी, तथा अपने देश वापस (स्त्री या पुरुष) आने का अधिकार है। अनुच्छेद ____ पंक्ति ____

SCERT TELANGANA

ऐतिहासिक संदर्भ (Historical Context)

वर्तमान में मणिपुर दो स्पष्ट भौगोलिक क्षेत्रों घाटी और पहाड़ से मिलकर बना है। स्वतंत्रता के पूर्व घाटी राजकीय शासन के अंतर्गत थी और पहाड़ी क्षेत्र स्वतंत्र थे। यहाँ मुख्य रूप से जनजाति जनसंख्या निवास करती थी। 1891 में ब्रिटिशों ने क्षेत्र पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। फिर भी राजा अपने राज्य पर शासन कर रहे थे। 1949 में मणिपुर राज्य ने राज्य को भारत में मिलाने के लिए भारत के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किया और मणिपुर को भारत का भाग बना दिया गया। कई जनजाति लोगों के द्वारा इस समझौते का विरोध किया गया जो यह बहस कर रहे थे कि वे स्वतंत्र रहेंगे और भारत का हिस्सा बनने के लिए राज़ी नहीं हुए।

जो लोग मणिपुर को भारत में मिलाने का विरोध कर रहे थे उसकी प्रतिक्रिया में भारत सरकार ने सेना भेजी। कानून और व्यवस्था बनाये रखने के लिए जो कानून बनाया गया उसे (AFSPA) कहा गया अर्थात सैन्य बल विशेष अधिकार अधिनियम (Armed forces Special Powers Act (1958)। अधिनियम के अंतर्गत बल को राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों में लिप्त होने के संदेह के आधार पर किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार करने या गोली मार देने का अधिकार प्रदान किया। यह तर्क किया गया कि अधिनियम का दुरुपयोग हो रहा है और प्रायः निर्दोषी व्यक्तियों को सताया और उनकी हत्या की जाती थी। यहाँ तक कि सुरक्षा बलों के द्वारा औरतों का भी शोषण और उनपर अत्याचार किया जाता था। औरत और माँ होने के नाते वे अपने बेटे और पति के लिए भी परेशान रहती थी। जिन्हें देश द्रोही होने के संदेह पर ले जाया जाता था और यातनाएँ दी जाती थीं। और बेटियों और माँ का लैंगिक शोषण किया जाता था। कभी-कभी जिन महिलाओं का शोषण होता था वे आत्महत्या भी कर लेती थी। 32 वर्षीय महिला थंगजम मनोरमा की जेल में मृत्यु का विरोध, एक ऐसी घटना थी जिसकी ओर सभी का ध्यान गया।

मीरा पैबी आंदोलन *(Meira Paibi* Movement)

मीरा पैबी (मीटी (Meitei) भाषा में) इसका शाब्दिक अनुवाद टार्च धारक (torch bearers) हो सकता है। मीरा पैबी 1970 के अंत में शराब के दुरुपयोग के कारण हुई सार्वजनिक अव्यवस्था को रोकने के लिए आरंभ हुआ एक आंदोलन है। लेकिन जल्दी ही यह मानव अधिकारों के लिए आंदोलन में बदल गया। क्योंकि 1980 के आरंभ में मणिपुर स्वतंत्रता के लिए अस्त्र आंदोलन का सामना करने के लिए भारी मात्रा में भारतीय सेना भेजी गयी थी। यह वह समय भी था जब राज्य को 'बाधित क्षेत्र' (disturbed area) घोषित कर दिया गया और AFSPA के नाम पर भारतीय सैन्य बल को संपूर्ण शक्तियाँ प्रदान की गयी। इसके परिणामस्वरूप अक्सर सैन्य गतिविधियाँ और मानव अधिकारों का उल्लंघन होने लगा। विरोध प्रदर्शन के साथ मीरा पैबी ने तत्काल प्रतिक्रिया की। मीरा पैबी रात में सड़कों पर गश्त लगाने लगी। प्रत्येक शहर और गाँव के वार्ड या लेइकी की प्रत्येक महिला बिना किसी हथियार के केवल लकड़ी की मशाल लेकर रोज गश्त में भाग लेती थीं। प्रत्येक रात, प्रत्येक लेइकी (Leikai) में, प्रत्येक गली के जंक्शन पर, महिलाओं की टोली समुदाय में अशांति और खतरे की निगरानी रखकर बैठी रहती थी। शांति के समय में कुछ महिलाएँ बारी बारी से निगरानी

SCERT TELANGANA

करती थी। लेकिन अत्यधिक तनाव की परिस्थिति में अधिक संख्या में भाग लेती थीं। ये कोई कार्यकर्ता या राजनैतिक प्रकृति की महिलाएँ नहीं थी। ये साधारण महिलाएँ थी जिन्होंने समुदायों की भलाई और सुरक्षा का सांस्कृतिक उत्तरदायित्व लिया था। मीरा पैबी दल यह भी माँग कर रहा था कि AFSPA को वापस भेज दिया जाय। धीरे-धीरे इस कार्य के विरुद्ध आंदोलन ने जोर पकड़ा और महिलाओं ने अपना संघर्ष अलग प्रकार से जताया। जैसेः- चुनाव का बहिष्कार करने या रिले भूख हड़ताल पर बैठकर। इनमें से एक ईरोम शर्मिला दस वर्ष से भी अधिक समय तक भूख हड़ताल पर रही और घर के अंदर नज़रबंद रही।

चित्र. 20 .8 : मीरा पैबी जुलूस में महिला

समस्या को सुलझाने के कई प्रयत्न किए गए। कई बार सेना के पिछले अफसरों ने भी क्षेत्र में झगड़ों के बारे में विस्तृत रूप से लिखा और यह जाना कि केवल बेहतर संरचनाओं और सुविधाओं के विकास से ही लोगों की स्वीकृति पायी जा सकती है। क्षेत्र से कानून रद्ध करने की संभावना देखने के लिए सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के एक जज बी.पी. जीवन रेड्डी को नियुक्त किया। यद्यपि समिति से अपनी रिपोर्ट पेश कर दी लेकिन अंतिम समाधान पर नहीं पहुँचा जा सका था।

सामाजिक आंदोलन की कुछ सामान्य विशेषताएँ (Some common features across social movements)

मानव अधिकार और पर्यावरण की कठिन सीमाओं को तोड़कर सामाजिक आंदोलन ने विभिन्न माँगें रखी थी। इन विभिन्न नियमों के आधार पर उन्होंने तर्क रखा। आपने ध्यान दिया होगा कि महालया और लूथर राजा भी पर्यावरण और समानता के प्रश्नों के साथ मानव अधिकारों के आदर्शों के लिए खड़े हुए थे। कुछ संदर्भों में आंदोलन उनके ऊपर लादे गये परिवर्तनों को रोकते हैं। अन्य लोग जैसे मर्टिन लूथर किंग या मीरा पैबी परिवर्तन की माँग करते थे। सामाजिक आंदोलन वैयक्तिक राजनैतिक दलों से प्रायः दूर रहते थे और एक कारण के लिए अधिक संगठित होते थे। इसके सदस्य विभिन्न राजनैतिक दलों से संबंधित हो सकते थे। अधिकतर उनके कार्यक्रम सहभागिता और प्रजातंत्रिक तरीके से निश्चित किए जाते थे। जब एक क्षेत्र के या एक समस्या से पीड़ित लोग यह अनुभव करते थे कि एक देश में विद्यमान राजनैतिक प्रणाली से उनकी आशाओं की पूर्ति नहीं हो रही है तब सामाजिक आंदोलन आरंभ होते थे।

मुख्य शब्द

नागरिक अधिकार	नागरिक अवज्ञा	अलगाव	अस्थायी
युद्ध विरोधी	प्रारूप काल	शस्त्रीकरण	पुनर्वास
क्षतिपूर्ति	शराब-विरोधी	प्रजातांत्रिक	सम्मिलित

अपनी सीखने की क्षमता सुधारें

1. यहाँ कुछ विषयों की सूची है जिनका उपयोग आप सामाजिक आंदोलनों की तालिका बनाने के लिए कर सकते हैं। उनपर आधारित एक तालिका बनाइए और आंदोलनों में समानताओं और असमानताओं का पता लगाइए। आंदोलन का मुख्य केंद्र बिंदु, स्थिति, मुख्य माँगें, विरोध के प्रकार, महत्वपूर्ण नेता, राज्य से प्रतिक्रिया समाज पर संभावित प्रभाव। (AS_3)
2. कनय्या, रम्या और सलमा में वाद-विवाद चल रहा था। रम्या तर्क कर रही थी कि ठीक है प्रेस की स्वतंत्रता पर रोक नहीं लगानी चाहिए। लेकिन यह निश्चित होना चाहिए कि लोग गरीबी में न जिएँ। सलमा तर्क कर रही थी कि केवल खाना ही महत्वपूर्ण नहीं है लेकिन प्रेस की स्वतंत्रता भी समान रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि लोगों के पास यह जानने का कोई अन्य रास्ता नहीं है कि देश के विभिन्न भागों में लोगों के सम्मान को क्या कोई ठेस पहुँच रही है। कनय्या कह रही थी कि प्रेस यदि अमीर और शक्तिशाली लोगों के लिए है तो वे साधारण लोगों के आशातीत विषयों को ढक क्यों देते हैं? उनकी विभिन्न आशाएँ थीं। आप किससे सहमत है। और मानव अधिकारों के संदर्भ से कारण बताइए? (AS_2)
3. सामाजिक आंदोलन की आधारभूत विशेषताएँ क्या हैं? (AS_1)
4. ऊपर लिखित केस अध्ययन में सामान्य व्यक्ति की भूमिका का वर्णन किस प्रकार किया गया है? (AS_1)
5. USA में काले लोगों के अधिकार और मीरा पैबी आंदोलन किस प्रकार समान और भिन्न है? (AS_1)
6. संसार के प्रजातंत्र को अति प्रमुख राजनैतिक प्रणाली के रूप में जाना जाता है। क्या आप के विचार में यह लोगों की सभी आशाओं की जिम्मेदारी लेने के योग्य है। इस अध्याय में दिए गए उदाहरणों के आधार पर 'प्रजातंत्र और सामाजिक आंदोलन पर एक संक्षिप्त लेख लिखिए। (AS_4)

7. चर्चा कीजिए और पता लगाइए, किस प्रकार आंदोलन संसार के लोगों को एकीकृत करते हैं जैसे कि भोपाल गैस त्रासदी के संदर्भ के विरोध के प्रचार के ऊपर दिए गए उदाहरण में हुआ है। (AS_3)

SCERT TELANGANA

अध्याय

21

तेलंगाणा राज्य के गठन हेतु आंदोलन

(The Movement for the Formation of Telangana State)

तेलंगाणा के लोगों द्वारा जल, निधि और रोज़गार के लिए किये गये एक लंबे संघर्ष के बाद 2 जून, 2014 को तेलंगाणा ने भारतीय संघ में पूर्ण विकसित राज्य का दर्जा प्राप्त किया। इस अध्याय में हम इस प्रक्रिया के बारे में पढ़ेंगे।

- आप या आपके परिवार के सदस्यों ने इस आंदोलन को देखा होगा या इसमें भाग लिया होगा। कक्षा में अपने अनुभवों की चर्चा कीजिए। आपके विचार में तेलंगाना के एक पृथक राज्य के रूप में माँग के पीछे क्या कारण हो सकते हैं?
- कुछ मुख्य व्यक्तियों की सूची का संकलन कीजिए, जिन्हें आपके माता-पिता और अध्यापक याद करते हैं। तेलंगाना राज्य के गठन में उनके द्वारा दिये गये योगदान के संदर्भ में अपने कक्षाकक्ष के लिए एक पोस्टर या दीवार समाचार पत्र तैयार कीजिए।

भारत में हैदराबाद राज्य का विलय (The merger of Hyderabad state with India)

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अंतिम चरण में हैदराबाद राज्य या निज़ाम अधिराज्य पर ध्यान केंद्रित हुआ। जब अंग्रेज़ों ने भारत छोड़ा तब निज़ाम अपने शासन के अधीन एक स्वतंत्र राज्य के गठन पर विचार कर रहा था। हैदराबाद के राष्ट्रवादी इसके विरुद्ध थे। हैदराबाद के 16 जिलों में से 8 जिलों में तेलुगु भाषी लोग रहते थे। इन भागों को ही तेलंगाणा कहा गया। हैदराबाद के राष्ट्रवादी, गाँवों में फैल गयें और उन्होंने तेलुगु भाषा के विकास, प्रजातांत्रिक सरकार और सामाजिक समानता के लिए प्रचार करना आरंभ किया। इस प्रचार के विकास के लिए 1920-30 में आंध्र महासभा का उदय हुआ। 1940 में तटीय आंध्र के राष्ट्रीयतावादियों ने भी इस आंदोलन का समर्थन किया। शीघ्र ही आंदोलन ने भू-सुधारों से संबंधित मुद्दों को उठाया तथा निज़ाम तथा रज़ाकारों का समर्थन करने

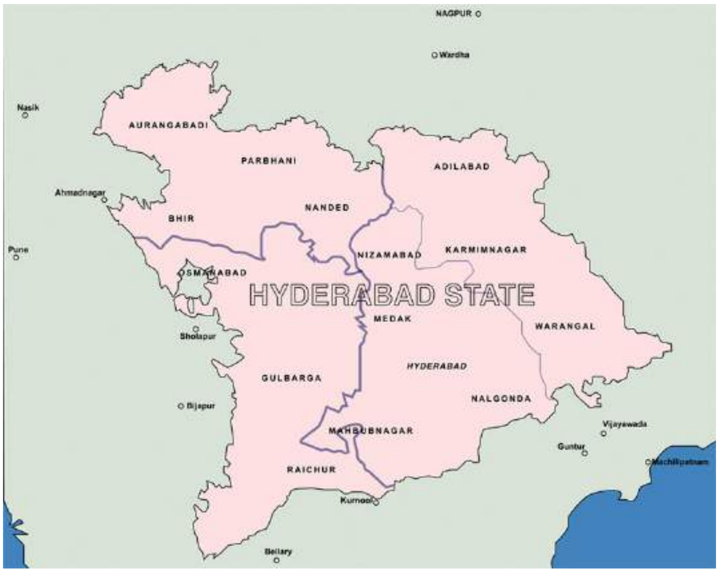

मानचित्र 1 एकीकृत हैदराबाद राज्य के साथ तेलंगाणा

SCERT TELANGANA

वाले दोराओं (Doras) के शासन का विरोध किया। इस आंतरिक संघर्ष ने कारण, जवाहरलाल नेहरु के प्रधानमंत्रित्व में भारतीय सरकार ने पोलिस कार्यवाही आरंभ की और भारतीय संघ में हैदराबाद राज्य के विलय को सुनिश्चित कर लिया। VIII कक्षा में आपने इसके बारे में पढ़ा होगा। उस समय तटीय आंध्र और रायलसीमा क्षेत्र मद्रास प्रेसीडेंसी के हिस्से थे। तेलुगु बोले जाने वाले सभी प्रदेशों को मिलाकर आंध्र प्रदेश राज्य के निर्माण के लिए शीघ्र ही एक आंदोलन आरंभ हुआ। पिछली कक्षाओं में भाषायी राज्यों के गठन के बारे में आप पढ़ चुके हैं।

जेंटलमैन समझौता और आंध्र प्रदेश राज्य का गठन (The Gentlemen's Agreement and the Formation of the State of Andhra Pradesh)

उस समय ऐसे तीन भिन्न राज्य थे जिनमें तेलुगु भाषा बोली जाती थी। इनमें तेलंगाना, तटीय आंध्र और रायलसीमा शामिल थे। भिन्न-भिन्न बोलियों के अतिरिक्त तीनों क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न संस्कृतियाँ और पहचान थी। तेलंगाना भाषा को एक समावेशित लोक परंपरा से लिया गया था जिनमें जनजातीय भाषाएँ, दक्कनी उर्दू, कन्नड़ और मराठी शामिल थी जबकि तटीय आंध्र की भाषा संस्कृतनिष्ठ थी। तेलंगाना की संस्कृति मिश्रित थी जो मुस्लिम, दलित, दस्तकार, जनजाति और प्रवासी समुदायों से ली गयी थी। तेलंगाना की सामाजिक रूपरेखा स्पष्ट थी। इसमें अन्य भागों की तुलना में, एक बड़े अनुपात में जनजाति लोग, पिछड़ी जाति के लोग और मुस्लिम लोग थे। ऐतिहासिक तौर पर, तेलंगाना की तुलना में तटीय क्षेत्रों में संस्कृत का गहरा प्रभाव था। वे भी अंग्रोज़ों के प्रत्यक्ष शासन के अधीन थे और उन्हें 19वीं शताब्दी से अंग्रेज़ी शिक्षा सुलभ थी। जिससे वे तीव्र आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से गुज़रे। इसके विपरीत निज़ामों के अधीन तेलंगाना में शिक्षा के माध्यम के रूप में उर्दू को थोपा गया। आधुनिक शिक्षा के विकास में यह प्रक्रिया धीमी थी। 1948 में तेलंगाणा की साक्षरता दर 9% थी विशेषतः महिला साक्षरता दर केवल 4% थी।

> निम्नलिखित विषयों पर तेलंगाना की अनोखी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
> i. प्राकृतिक विशेषताएँ
> ii. समाज
> iii. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

जहाँ तटीय आंध्र मुख्यतः एक मैदानी क्षेत्र या जिनमें विकसित नहर सिंचाई व्यवस्था से पूर्ण डेल्टा सम्मिलित थे। वहीं तेलंगाना शुष्क पठारी क्षेत्र था जो वर्षा आधारित कृषि, पशुपालन, शिकार तथा वनों से एकत्रीकरण पर आधारित था। तालाबों के निर्माण के लिए लहरदार प्रकृत भू-भाग का उपयोग किया जाता था और इस जल का उपयोग विभिन्न फसलों के उगाने में किया जाता था। ब्रिटिश शासन के दौरान, कृषि, व्यापार और उद्योग के संदर्भ में तटीय आंध्र अधिक विकसित था। इसी समय तेलंगाना के पास इसमें से बहने वाली महत्वपूर्ण नदियों के विकास की महान् क्षमता थी और इसके पास बहुत समृद्ध खनिज़ संपदा तथा वन थे। इसी कारण तटीय आंध्र के धनी लोग तेलंगाना के संसाधनों के उपयोग के लिए, तेलंगाना में निवेश के लिए आतुर थे। परिणामस्वरूप आंध्र क्षेत्र से, विशालांध्रा की माँग हुई।

SCERT TELANGANA

भारत में विलय के पश्चात्, हैदराबाद राज्य 1952 में प्रजातांत्रिक राज्य बना तथा बरुगुला रामकृष्णा राव इसके प्रथम मुख्यमंत्री के रूप में चुने गये। आंध्र राज्य 1953 में मद्रास प्रेसीडेंसी से अलग हुआ तथा टंगटूरी प्रकाशम इसके मुख्यमंत्री बने। तेलुगु भाषी क्षेत्रों को एक में विलय करने के लिए सक्रिय प्रचार आरंभ हुआ। जहाँ आंध्र विधानसभा ने विलय के समर्थन में सर्वसम्मति दी, वहीं, हैदराबाद राज्य विधान सभा के सदस्यों की भारी संख्या का विलय के बारे में गंभीर विचार थे। उन्हें चिंता थी कि अधिक धनी और विकसित तटीय आंध्र के अभिजात वर्ग भावी राज्य पर शासन करेंगे और तेलंगाना राज्य के लोग बिना किसी लाभ के अपने क्षेत्र के संसाधनों पर से नियंत्रण खो देंगे। वे लोग अपने क्षेत्र के युवाओं के शैक्षिक और रोज़गार के अवसरों के लिए भी चिंतित थे क्योंकि तटीय प्रदेशों में अधिकांश संख्या में अंग्रेज़ी शिक्षित युवा थे। संघीय सरकार की पहल से दोनों तरफ के नेताओं ने दिल्ली में भेंट की और 20 फरवरी 1956 को वे जिस निर्णय पर पहुँचे उसे ''जेंटलमैन समझौता'' (Gentlemen's Agreement) कहा जाता है। आंध्र के बैजवाडा गोपाल रेड्डी, नीलम संजीव रेड्डी, गौतू लच्चन्ना, अल्लूरि सत्यनारायण राजु तथा तेलंगाणा के बूर्गुला रामकृष्णा राव, मर्री चेन्ना रेड्डी, जे.वी.नरसिंगराव और के.वी.रंगारेड्डी ने समझौते पर हस्ताक्षर किये। मूलभूत रूप से 14 बिंदुओं पर उन्होंने समझौता किया। इससे तेलंगाना के लोगों की संतुष्टि के आधार पर दो राज्यों के विलय का मार्ग सुगम हुआ। परिणामस्वरूप, एक नये राज्य आंध्र प्रदेश का गठन हुआ, जिसकी राजधानी हैदराबाद थी। समझौते के मुख्य बिंदु थे -

1. **प्रशासन पर जो व्यय होगा वह समानुपात में दोनों राज्यों द्वारा वहन किया जायेगा तथा तेलंगाना क्षेत्र से होने वाले अतिरिक्त राजस्व को तेलंगाना के विकास के लिए खर्च किया जायेगा।**
2. **तेलंगाना की विद्यमान शैक्षिक सुविधाओं तेलंगाणा क्षेत्र के छात्रों के लिए ही आरक्षित रखा जायेगा।**
3. **मुल्की नियमों को वैसे ही अमल में लाया जायेगा जिसके अंतर्गत निर्णय लिया गया कि तेलंगाना में कम से कम 12 वर्ष तक निवास करने वाले लोग ही तेलंगाना में नौकरी पाने और तेलंगाना के शैक्षिक संगठनों में प्रवेश पाने के योग्य होंगे।**
4. **तेलंगाना के विकास और आवश्यकताओं पर ध्यान देने के लिए एक क्षेत्रीय परिषद्, विधान सभा के 20 सदस्यों के मेल से बने संवैधानिक निकाय** (Statutory body) **को आरंभ करने का निर्णय लिया गया।**
5. **तेलंगाना की कृषिगत भूमि के विक्रय का नियंत्रण क्षेत्रीय परिषद् के पास होगा।**
6. **आंध्र प्रदेश मंत्रिमंडल में 40 प्रतिशत सदस्य तेलंगाना से और 60 प्रतिशत सदस्य आंध्र से होंगे।**
7. **यदि मुख्य मंत्री आंध्र के होंगे तो उपमुख्य मंत्री तेलंगाना के होंगे। यदि मुख्य मंत्री तेलंगाना के होंगे तो उपमुख्यमंत्री आंध्र के होंगे।**

तेलंगाना के लिए क्षेत्रीय परिषद की स्थापना का प्रस्ताव एक नया आविष्कार था।

SCERT TELANGANA

मानचित्र 2 भूतपूर्व आंध्रप्रदेश

अन्य क्षेत्रों के लिए विकास योजनाएँ राज्य सरकार को ही बनाना था। किंतु तेलंगाना के संदर्भ में, यह कार्य क्षेत्रीय परिषद् का ही था। क्षेत्रीय परिषद् को तेलंगाना के सर्वांगीण विकास की सुरक्षा करनी थी। एक सामान्य योजना के अंतर्गत इसे ही योजना और विकास, सिंचाई और औद्योगिक विकास से संबंधित सभी मुद्दों को देखना था। तेलंगाना क्षेत्र में सेवाओं में भर्ती का कार्य भी इसे ही देखना था। बाहरी क्षेत्रों से आने वाले लोगों को, तेलंगाना की भूमि को बेचने से संबंधित विषय पर नियंत्रण का कार्य भी क्षेत्रीय परिषद् का ही था।

यह समझौता राज्य संस्थानों के समान व्यय की सुनिश्चितता पर बल देता था तथा तेलंगाना के युवाओं के शैक्षिक और रोज़गार अवसरों को सुनिश्चित करता था।

परिणामस्वरूप आंध्र प्रदेश के नये राज्य में इस समझौते ने तेलंगाना की एक अलग पहचान बनायी। आगे इसीलिए इसे ''राज्य में राज्य'' (State within the State) के नाम से जाना गया।

- कल्पना कीजिए कि आप तेलंगाना क्षेत्रीय परिषद के सदस्य हैं। आप किन विशिष्ट विकास गतिविधियों का सुझाव देंगे? आपके द्वारा प्रस्तावित अति महत्वपूर्ण तीन योजनाओं की सूची बनाइए।
- किन तरीकों से तेलंगाना के अनुसूचित जाति, जनजाति और बंजारें लोगों के रोज़गार के अवसरों को सुनिश्चित किया जा सकता है?
- तेलंगाना के खनिज संसाधनों के उपयोग के उत्तम तरीके क्या हो सकते हैं?
- तेलंगाना के किसानों और श्रमिकों के द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियाँ अन्य क्षेत्रों के लोगों की चुनौतियों से भिन्न हैं। कक्षा में चर्चा कीजिए।
- विद्यार्थियों ने तेलंगाना के लिए पृथक राज्य की माँग के लिए महत्वपूर्ण भूमिका क्यों निभायी होगी? अपने विचार बताइए।

1969 आंदोलन

समय के गुज़रने के साथ तेलंगाना के क्षेत्रों में जेंटलमैन समझौते की गैर अमलवारी पर असंतोष उत्पन्न हुआ। इस असंतोष के तीन प्रमुख कारण थे : तेलंगाना से प्राप्त अतिरिक्त राजस्व को राज्य के अन्य क्षेत्रों को स्थानांतरित करने, सरकारी क्षेत्र में रोज़गार में भेदभाव, मुल्की नियमों का उल्लंघन करते हुए तेलंगाना क्षेत्र में कार्यरत तटीय आंध्र के लोगों को अधिवासी दर्जा (domicile status) प्रदान करना आदि। कुछ नियुक्तियों पर यह एक विरोध के रूप में आरंभ हुआ और शीघ्र ही एक जन आंदोलन बन गया जिसमें उस्मानिया विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने मुख्य भूमिका निभाई। अनेक प्रदर्शन हुए, हड़तालें और अनशन किये गये जिसमें मृत्यु तक अनशन भी शामिल था। हज़ारों

SCERT TELANGANA

की संख्या में व्यापक प्रदर्शन हुए। प्रदर्शनकारियों पर फायरिंग के रूप में पुलिस प्रतिरोध हुआ। आधिकारिक रिकार्ड् के अनुसार आंदोलन के दौरान तीन सौ सत्तर लोगों, जिनमें अधिकांश विद्‌यार्थी थे, को अपनी जानें गंवानी पड़ी।

इसी समय तेलंगाना के कई नेताओं ने मिलकर एक पृथकराज्य के गठत हेतु कार्य करने के लिए तेलंगाना प्रजा समिति के नाम से एक संघ (forum) की स्थापना की। आगे चलकर इसने एक नये राजनैतिक दल का रूप ले लिया। केंद्रीय सरकार ने लंबी बातचीत के बाद आठ बिंदुओं की योजना तैयार की जिसमें मूलभूत रूप से विभिन्न समितियों की स्थापना का लक्ष्य शामिल था। फिर भी यह अधिकांश लोगों को संतुष्ट नहीं कर सका और कुछ समय के लिए आंदोलन धीमा पड़ गया।

Telangana agitation

Six injured in Shamshabad Police firing

चित्र 21.1 तेलंगाना आंदोलन 1969 में विरोध के

तेलंगाना आंदोलन के विरोध में 1972 में सीमांध्र क्षेत्र में एक आंदोलन आरंभ हुआ जिसे ''जय आंध्र आंदोलन'' कहा जाता है। इस आंदोलन की माँग थी - तटीय जिलों में बड़े पैमाने पर विकास तथा अधिवासी दर्ज़ा (Domicile Status) से संबंधित मुल्की नियमों की समाप्ति। यहाँ भी, आंदोलन में छात्रों ने मुख्य भूमिका निभायी क्योंकि उन्हें अपने रोज़गार अवसरों के लिए खतरे की आशंका हुई। 1973 में केंद्र सरकार द्‌वारा छह बिंदुयी सूत्रों का गठन हुआ। इसके द्‌वारा सभी क्षेत्रों को सुनिश्चित किया गया कि सरकारी नौकरियाँ स्थानीय लोगों को दी जायेगी, शैक्षिक अवसरों का विस्तार सभी क्षेत्रों में किया जायेगा और हैदराबाद में केंद्रीय विश्वविद्‌यालय की स्थापना की जायेगी। इसी समय मुल्की नियमों तथा तेलंगाना के लिए गठित क्षेत्रिय समिति को समाप्त कर दिया गया। इस प्रकार तेलंगाना की अलग पहचान की शपथ जो ''जेंटलमैन समझौते'' में की गई थी वह समाप्त हो गई। आंध्र प्रदेश राज्य के सभी क्षेत्रों को एक ही माना जाने लगा।

सत्तारुढ़ कांग्रेस पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व और केंद्र सरकार द्‌वारा बार-बार बाधा उत्पन्न करने के विरोध में इसी समय राजनैतिक गतिविधि की नयी लहर उत्पन्न हुई। इसीसे तेलुगु देशम पार्टी के गठन का मार्ग प्रशस्त हुआ और क्षेत्रीय आंदोलन कुछ समय के लिए मंद पड़ गया।

SCERT TELANGANA

वास्तविक सिंचित क्षेत्र - 2007 में लाख हेक्टेर में

क्षेत्र	कुँआ	नहर	तालाब	अन्य
आंध्र क्षेत्र	5	13	2.5	2.5
तेलंगाना क्षेत्र	14	2.5	2	0.5

सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के संदर्भ में हम देखते हैं कि तेलंगाना क्षेत्र मुख्य रूप से कुँओं पर निर्भर है और आंध्र क्षेत्र नहरों की सिंचाई पर निर्भर है।

तेलंगाना में बढ़ता असंतोष

जैंटेलमैन समझौते के बावजूद अनेक मुख्य बिंदुओं जैसे क्षेत्रीय परिषद् के संविधान की अमलवारी नहीं हुई थी। केवल क्षेत्रीय समिति का गठन किया गया था और इसकी सिफारिशों को अनिवार्य नहीं किया गया और अधिकतर इन्हें सरकार द्वारा नज़र अंदाज किया गया था।

सुनियोजित विकास के दौरान, 1956 से 1990 के बीच आंध्र प्रदेश राज्य में अनेक विकासशील गतिविधियों की शुरुआत हुई। विशाल बाँधों का निर्माण किया गया, सिंचाई और विद्युत परियोजनाओं की शुरुआत हुई, वृहत् खनन और औद्योगिक भवनों का आरंभ हुआ। कृषि उत्पादन में रूपांतरण के लिए कृषि में हरित क्रांति की शुरुआत हुई। अधिकांश संख्या में विश्वविद्यालयों और तकनीकी संस्थाओं की स्थापना हुई। 1990 के बाद राज्य में, विशेषकर हैदराबाद में, सूचना और तकनीकी उद्योग में अप्रत्याशित विकास हुआ। तेलंगाना के लोगों ने विकास की विषमताओं को अनुभव किया क्योंकि सही लाभ राज्य के अन्य क्षेत्रों को हो रहा था। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि तेलंगाना क्षेत्र के संसाधनों का उपयोग स्थानीय लोगों के लाभ के लिए नहीं हो रहा है। युवाओं ने यह भी अनुभव किया कि राज्य में उत्पन्न नौकरी के अवसरों का लाभ अन्य क्षेत्रों के लोगों को हो रहा है।

- आप ऐसा क्यों सोचते है कि कुल पैदावार क्षेत्र में वृद्धि कृषि की प्रगति का सूचक है?
- सिंचाई के लिए कुँओं पर अत्यधिक निर्भरता के कारण तेलंगाना के किसानों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ा?
- अतीत में तालाब जैसी जन सिंचाई व्यवस्था को क्यों नज़रअंदाज़ किया गया होगा? इसके पुनःसंग्रहण के लिए क्या कदम उठाये जाने चाहिए?
- तेलंगाना में अत्यधिक संख्या में आत्महत्याओं के कारण क्या हैं?
- तटीय आंध्र की तुलना में तेलंगाना में साक्षरता दर की कमी के क्या कारण हैं?

कुल कृषि क्षेत्र - मिलियन हेक्टर में

क्षेत्र	1955-56	2006-07	वृद्धि %
आंध्र क्षेत्र	4.2	5.3	20
तेलंगाना क्षेत्र	4.8	5	5

वास्तविक सिंचित क्षेत्र - लाख हेक्टेर में

क्षेत्र	1955-56	2006-07	वृद्धि %
आंध्र क्षेत्र	17	23	135
तेलंगाना क्षेत्र	7	19	257

Source : Sri Krishna Committee Report

यदि हम कुल कृषि क्षेत्र के सूचकांक को देखेंगे तो कुल क्षेत्र जिसमें एक वर्ष में पैदावार होती है तो हम आंध्र क्षेत्र में अत्यधिक वृद्धि और तेलंगाना में निश्चित गतिहीनता को देखेंगे।

तेलंगाना में सिंचाई की वृद्धि के लिए मुख्यतः किसानों को मूल्य चुकाना पड़ा क्योंकि इसके लिए उन्होंने खर्चीले कुँए खुदवाये जबकि आंध्र क्षेत्र में सिंचाई का विस्तार नहर सिंचाई से हुआ। यह सुविधा उन्हें सरकार द्वारा दी गयी।

1993-94 में कृषि से होने वाली प्रति ग्रामीण व्यक्ति आय (लगभग 7,800 रु.) दोनों क्षेत्रों में समान थी। आंध्र क्षेत्र में 2007-08 में यह बढ़कर 11,800 रु. हो गयी, जबकि तेलंगाना में ऐसी कोई वृद्धि नहीं देखी गयी और यह केवल 10,000 रु. तक ही पहुँच सकी।

ठीक इसी समय, तेलंगाना की जनसंख्या का कृषि श्रम 38% से बढ़कर 47% हो गया। किंतु आंध्र में केवल 1% वृद्धि हुई। इससे तेलंगाना में महान कृषि संकट उत्पन्न हुआ जिससे तेलंगाना के किसानों ने अपनी भूमि को बेच दिया और किसानों ने मज़दूरों का रूप ले लिया। मई 2004 और नवंबर 2005 के बीच, सूखा, फसलों के नुकसान, लोगों के आजीविका से च्युत होने के कारण आंध्रप्रदेश में 1068 आत्महत्या के मामले दर्ज़ किये गये। इसमें तेलंगाना के आत्महत्या के मामले 663 थे। फलस्वरूप राज्य में संकट के कारण जो आत्महत्याएँ हुई उसमें तिरसठ प्रतिशत आत्महत्याएँ तेलंगाना क्षेत्र में हुईं।

यहाँ तक कि सर्वांगीण शैक्षिक उपलब्धि में भी तेलंगाना तटीय आंध्र से पीछे ही था। 2001 में तेलंगाना की साक्षरता दर 53% और आंध्र की साक्षरता दर 63% थी। इसी काल के दौरान तेलंगाना के निर्धन और सामाजिक रूप से हीन वर्गों में साक्षरता दर और भी कम थी। तेलंगाना में कॉलेजों की संख्या 159 थी और यदि हैदराबाद को छोड़ा जाय तो तेलंगाना में केवल 116 कॉलेज ही थे और आंध्र में कॉलेजों की संख्या 181 थी जबकि दोनों प्रदेशों में युवाओं की संख्या समान थी। ठीक इसी प्रकार कॉलेज शिक्षा के अनुदान की राशि तेलंगाना के लिए लगभग 93 करोड़ थी और आंध्र के लिए 224 करोड़ थी।

इसके साथ ही असमान विकास के कारण, तेलंगाना के लोगों ने उनके साथ होने वाले सांस्कृतिक भेदभाव का भी अनुभव किया। विलय के पश्चात् तटीय आंध्र की भाषा और संस्कृति को एक आदर्श भाषा और संस्कृति के रूप में प्रोत्साहित किया गया और तेलंगाना की भाषा और संस्कृति को हीन (पिछड़ी) माना गया। तेलंगाना के इतिहास, संस्कृति और नेताओं को विद्यालयीन पाठ्यपुस्तकों में पर्याप्त स्थान नहीं दिया गया। तेलंगाना के लोक देवताओं और त्यौहारों को नज़रअंदाज़ किया गया जबकि तटीय आंध्र के संस्कृतनिष्ठ सांस्कृतिक रिवाज़ों और त्यौहारों को प्रमुखता दी गयी। तेलंगाना के लोगों का चित्रांकन जिन फिल्मों में हुआ, उन फिल्मों को भी पिछड़ी और अपरिष्कृत माना गया।

इसी बीच राज्य के बाहरी और तटीय आंध्र के धनी लोगों ने तेलंगाना विशेषकर हैदराबाद शहर और इसके चारों ओर भूमि क्रय में बड़े पैमाने पर निवेश करना आरंभ किया। इससे प्रदेश में निवेश तो हुआ किंतु स्थानीय लोगों को इस विकास से कुछ लाभ नहीं हुआ और वास्तविकता में रियल इंस्टेट व्यापारियों के कारण अपनी ही भूमि पर से उनका नियंत्रण खत्म होने लगा।

ठीक इसी समय तेलंगाना के श्रमिक और गरीब किसान विभिन्न प्रकार के दबावों का सामना कर रहे थे। एक ओर, शुष्क भूमि वाले गरीब किसान घटते जल संसाधनों के कारण सीमित कृषि उत्पादों का सामना कर रहे थे। कारीगर अपने उत्पादों की माँग में कमी के साथ लकड़ी और बाँस जैसे कच्चे माल के स्त्रोतों में भी कमी का सामना कर रहे थे। धोबी और बंजारे समुदायों जैसी अनेक पारंपरिक सेवा वर्गों ने भी अपनी आजीविका और सेवा की माँग

SCERT TELANGANA

में कमी का अनुभव किया। जबकि ऐसी समस्याओं का सामना सारे देश में गरीब लोग करते हैं। तेलंगाना के लोग यह समझ रहे थे कि उनकी इस स्थिति का कारण राज्य सरकार की धनी-समर्थक नीतियाँ हैं जो आंध्र के व्यापारियों की मदद के लिए बनाई गयी थी। वे एक ऐसी सरकार की कामना कर रहे थे जो उनकी माँगों को सुने और उनकी समस्याओं पर गंभीरता से ध्यान दे।

1990 में आंदोलन

- तेलंगाना में मनाये जाने वाले प्रमुख त्यौहार कौन से हैं? माहवार सूची तैयार कीजिए।
- ऐसी फिल्मों की सूची बनाइए जो तेलंगाना की जनता, भाषा और संस्कृति का सही प्रतिनिधित्व करती है।
- पिछले बीस वर्षों के दौरान तेलंगाना एक विशाल और समृद्ध शहर बन गया है। तेलंगाना की जनता इससे संतुष्ट क्यों नहीं है?
- जिन समस्याओं का सामना तेलंगाना की जनता कर रही है वैसी ही समस्याओं का सामना अन्य राज्यों के लोग भी कर रहे हैं। आपके विचार में पृथक राज्य का गठन क्या उनकी समस्याओं का पर्याप्त समाधान है। क्यों?

आर्थिक उदारीकरण की नीतियों के परिणामस्वरूप जहाँ किसानों, कारीगरों और अन्यों के विकट समस्याओं का सामना किया वहीं अधिकांश संख्या में ठेकदारों और निजी निवेशकों ने बड़ा लाभ उठाया। किसानों ने उर्वरकों, कीटनाशकों, बिजली तथा सस्ते विदेशी कृषि उत्पादों जैसे निर्गतों के मूल्यों में अधिकतम वृद्धि का सामना किया। तेलंगाना में भू-जल संसाधनों में कमी ने समस्या को और भी बढ़ाया क्योंकि किसानों को गहरे कुएँ खुदवाने के लिए बहुत अधिक निवेश करना पड़ा। जैसे कि ऊपर बताया गया है इसी कारण प्रदेश में अचानक किसानों ने आत्महत्याएँ की। तेलंगाना में बाहरी व्यक्तियों को कृषि भूमि का तेज़ी से विक्रय हुआ। ठीक इसी प्रकार कारीगरों, पारंपरिक सेवा प्रदाताओं के पास न तो कोई नौकरियाँ थीं और न ही उन्हें नयी नौकरियाँ पाने के आसार नज़र आ रहे थे।

यह वही समय था जब सरकार अपने खर्च में कमी और भर्तियों को समाप्त करने का प्रयास कर रही थी। निजी क्षेत्र के अधिक विस्तृत होने पर भी, बेरोज़गारी या असुरक्षित रोज़गार एक बड़ी समस्या था। धीरे-धीरे इनमें से, जनसंख्या के प्रत्येक खण्डों ने अपनी मांगों के लिए अपने अलग संगठनों का विकास किया और आंदोलन चलाये। अपने जीवन के पारंपरिक रूप पर प्रवल खतरे का अनुभव करते हुए जनजाति जाति संगठन जैसे- *तुडुमदेब्बा, लम्बाड़ी नागरभेरी* और *येरुकला कुर्रु* और अन्यों ने जल, जंगल और जमीन जैसी अपनी वर्तमान जरूरतों की सुरक्षा के लिए सामने आना शुरु किया। *मदिगा डंडोरा, कुरमागोल्ला डोलुदेब्बा* और *मुकुदेब्बा* का गठन हुआ। ताड़ी निकालना, भेड़ पालन, बुनाई, मत्स्य पालन जैसे वर्ग व्यवसाय कारीगारों के लिए असंबद्ध होने लगे जिससे वर्ग व्यवसायों को खतरा उत्पन्न होने लगा। इसी कारण तेलंगाना आंदोलन से संबंधित बहुत छोटे समुदाय भी अपनी समस्याओं के समाधान की अपेक्षा कर रहे थे।

तेलंगाना की जनता पर होने वाले अन्यायों की जानकारी प्राप्त करने के लिए 1989 में बुद्धिजीवि वर्ग (Intelligentsia) ने तेलंगाना इंफार्मेशन ट्रस्ट (Telangana Information Trust) की स्थापना की। 1 नवंबर 1996 में प्रो.जयशंकर की अध्यक्षता बुद्धिजीवि वर्ग ने वरंगल में तेलंगाना विद्रोहम् नामक सभा का आयोजन किया। इसकी प्रेरणा से तेलंगाना राज्य के गठन की माँग के लिए अनेक संस्थाओं का गठन हुआ। तेलंगाना जन सभा (1997) और तेलंगाना महासभा (1997) ने पिछड़े वर्गों के आंदोलनों को राज्य आंदोलनों में विलय करने में मदद की।

तेलंगाना के कर्मचारियों ने अपने संगठन बनाये जिनमें अध्यापक, गैर-गजेटेड और गजेटेड अधिकारी शामिल थे। तेलंगाना के बौद्धिक वर्ग ने एकजुट होकर विभिन्न कोणों से मामलों की संकल्पनाओं को समझने के लिए 1977 ई. में उस्मानिया विश्वविद्यालय में एक सेमिनार का आयोजन किया। कर्मचारियों, विद्यार्थियों, लेखकों और सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं ने सेमिनारों, व्यवसायों, सभाओं और अन्य धूम-धामों का आयोजन आरंभ किया। इन आवेगों ने नये कार्यकर्ताओं को उत्पन्न किया और अनिवार्य रूप से तेलंगाना की हर सभा में उनके प्रदर्शन होने लगे। जगत्याल जैत्रायात्रा 1978 और वरंगल रैतुकुली संघम 1990 के बीच नवीन सक्रियतावाद ने युवाओं को नयी दिशा दिखाई और युवाओं से यह संदेश ग्रामीण जनता तक पहुँचा। कार्यकर्ताओं की नयी पीढ़ी को तैयार करने के लिए तेलंगाना का यह काल बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस नयी प्रेरणा से अनेक संगठनों का गठन हुआ।

तेलंगाणा राष्ट्र समिति (The Telangana Rashtra Samithi)

अनेक संगठनीय प्रयोग जैसे : तेलंगाना जन परिषद्, तेलंगाना महासभा, तेलंगाना जन सभा तथा तेलंगाना *ऐक्य वेदिका* ने राजनैतिक जोश और सक्रियतावाद की भावना का प्रयत्न किया किंतु इनसे किसी राजनैतिक दल की उत्पत्ति नहीं हुई। इसी संदर्भ में अप्रैल 2001 में तेलंगाना राष्ट्र समिति का गठन हुआ। इसी बीच तेलंगाना आंदोलन 'धूम-धाम' (सार्वजनिक गीत और नृत्य कार्यक्रम), 'गर्जना' (माँगों की घोषणा के लिए वृहद् जन सभाएँ) और पदयात्राएँ (यात्राएँ) जैसे विभिन्न विद्रोहों के रूपों द्वारा अभिव्यक्त हुआ। तेलंगाना की प्रसिद्ध माँगों की अभिव्यक्ति के लिए पारंपरिक बोनालु (देवताओं को चढ़ावा), रंगोली बनाना जैसे कार्यक्रम भी किये गये। तेलंगाना के सेवा वर्गों ने सड़कों पर अपने ग्राहकों के कपड़े धोकर, हजामत बनाकर तथा सार्वजनिक स्थलों पर सामूहिक भोजन (वंटावरुपु) बनाकर तेलंगाना आंदोलन में भाग लिया।

यह वृहद् आंदोलन गाँवों में दिसंबर 2009 और अप्रैल 2010 के बीच निरंतर चलता रहा। छात्रों ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया। ऐसी स्थिति में छात्रों ने संयुक्त कार्यवाही समिति (Joint action committee) (JAC) की स्थापना की। JACs का आवेश आगे चलकर सभी संगठनों तक फैल गया और तेलंगाना में सैकड़ों JACs उत्पन्न हो गये। नवंबर 2009 से एक दुखद युग का आरंभ हुआ। क्योंकि इसमें सैकड़ों युवाओं ने अपने परिवारों और तेलंगाना को छोड़कर आत्महत्याएँ की थी।

सबद्ध वर्ण (सभी वर्गों) जैसे :- चाकली (कपड़े धोने वाले), नाई ब्राह्मण (नाई) ताड़ी निकालने वाले, काटीकापारलु (मृतों को दफनाने वाले) वंशराजुलु, लंबाडे, येरुकला और

SCERT TELANGANA

चित्र 22.2, 22.3 और 22.4:
भारी संख्या में लोगों ने विभिन्न तरीकों से भाग लिया। इस अध्याय में वर्ष 2000 के बाद की इन घटनाओं को दर्शाने वाले अनेक चित्र हैं। सकल जनल सम्मे का चित्र अध्यापकों, किसानों और स्त्रियों की भागीदारी को बताता है जिसमें वे अपनी माँग रख रहे हैं।

चित्र 21.2

चित्र 21.3

चित्र 21.4

- विभिन्न व्यवसायों के लोगों ने किस प्रकार आंदोलन में भाग लिया? उदाहरण दीजिए।
- हम सभी को आगे आकर पृथक राज्य के लिए होने वाले आंदोलन में भाग लेना आवश्यक था। क्यों? अपने विचार बताइए।

मादिगा लोगों ने अपने स्वयं की संयुक्त कार्यान्वयन समिति JACs का निर्माण किया तथा विरोध आंदोलन में भाग लिया। कई मंडल मुख्यालयों में श्रृंखलाबद्ध अनशन का आयोजन किया गया जिसमें हर दिन एक विशेष वर्ग समूह के लोग इकट्ठे होकर अपने पारंपरिक उपकरणों द्वारा सार्वजनिक स्थानों पर अपनी कारीगरी का प्रदर्शन करते थे। ये विरोध पारंपरिक व्यवसायों और जातियों तक ही सीमित नहीं थे। आधुनिक व्यवसायों जैसेः- अध्यापकों, औद्योगिक श्रमिकों, खदान मज़दूरों, व्यापार संघों तथा नारी संगठनों ने भी ऐसे ही विरोध किये।

के.चंद्रशेखर राव का अनशन - 2009

इन संवेगों को निर्णयात्मक रूप देते हुए तेलंगाना राष्ट्र समिति के नेता के.चंद्रशेखर राव ने सिद्दीपेट में 29 नवंबर 2009 से अनिश्चितकालीन अनशन की घोषणा की। अनशन के आरंभ होने के पूर्व ही उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। उन्होंने खम्मम जेल में अनशन आरंभ किया और उसके बाद अस्पताल में अपने अनशन को जारी रखा। उनके प्रति निष्ठा दर्शाने के लिए उस्मानिया विश्वविद्यालय के छात्रों ने 16 नवंबर को तेलंगाना छात्र संयुक्त कार्यवाही समिति (TJAC) की स्थापना की। संयुक्त कार्यवाही समिति (JAC) की स्थापना की लहर काकतीय विश्वविद्यालय और बाद में तेलंगाना, के पालमुर, सातवाहन और महात्मागाँधी विश्वविद्यालयों तक पहुँच गयी। तब कर्मचारी जे.ए.सी., अधिवक्ता जे.ए.सी., जाति और समुदायों की जे.ए.सी. और जिलास्तरीय जे.ए.सी. का उद्भव हुआ।

तेलंगाना राष्ट्र समिति के नेता, के.चंद्रशेखर राव का अनशन एक तीव्र जन आंदोलन बन गया। 29 नवंबर 2009 से 9 दिसंबर 2009 के बीच लगभग दस दिनों तक वे अनशन पर थे।

SCERT TELANGANA

इसने लोगों को और प्रेरित किया तथा आंदोलन ने एक नया मोड़ ले लिया।

तेलंगाना प्राप्ति की प्रक्रिया में:

इस समय की सबसे बड़ी घटना छात्र जे.ए.सी. द्वारा की गयी असेम्बली मुट्टडी (विधानसभा पर आक्रमण) की घोषणा थी। यदि पृथक राज्य की घोषणा नहीं होगी तो छात्र जे.ए.सी. ने 10 दिसंबर 2009 को विधानसभा पर आक्रमण की घोषणा की। असंबली मुट्टडी में भाग लेने के लिए विभिन्न विश्वविद्यालय के छात्र हैदराबाद शहर आये और विधानसभा के आस-पास अपने मित्रों और संबंधियों के घरों में छिप गये।

समुदायों के साधारण जनों तक आंदोलन का प्रसार, के.चंद्रशेखर राव का अनशन और प्रस्तावित असेंबली मुट्टडी जैसी उपर्युक्त परिस्थितियों ने आखिरकार केंद्र सरकार को तेलंगाना के गठन की घोषणा के लिए राज़ी किया। सीमांध्र के विभिन्न एम.एल.ए. और एम.पी. के तीव्र विरोध के बावजूद

- तेलंगाना राज्य के गठन से खान और कारखाना श्रमिक किस तरह लाभान्वित हो सकते हैं?
- वे नीतियों कौनसी हैं जिन पर चलकर कारीगर और हस्तकार एक प्रतिष्ठित आजीविका प्राप्त कर सकते हैं?
- नये राज्य में विभिन्न प्रकार के जनजातीय लोगों की ज़रुरतों को पूर्ण करने के लिए कौनसे कदम उठाये जाने चाहिए?

तेलंगाना आंदोलन में विरोध के रूप

तेलंगाना आंदोलन ने धूम-धाम, गर्जना, सड़क बंद, असेंबली मुट्टडी, पदयात्रा, बोनालु, मिलियन मार्च, सकल जनुल सम्मे तथा सागरहारम जैसे विभिन्न विरोध के माध्यमों और जन चेतनाओं के रूपों का नव-निर्माण किया।

'धूम-धाम'- गीतों और नृत्यों द्वारा विरोध का एक रूप था। विभिन्न लोक-रीतियों के अनेक कलाकार - गायक और नृत्यकार एक ही मंच या आत्म प्लेटफार्म पर आते हैं और अपने कौशलों का प्रदर्शन करते हैं। ओग्गुकथा, चिरुथालु, कोलाटम, बतुकम्मा, गोल्लासुड्डुलु - एकनाथम और अन्य स्थानीय गीत इस धूमधाम में आम है। उन्होंने तेलंगाना के गीतों पर अनेक नृत्यों का प्रदर्शन किया। उन्होंने तेलंगाना की संस्कृति को प्रक्षेपित किया तथा तेलंगाना आंदोलन को सुदृढ़ करने के लिए साधारण जानता को शिक्षित किया।

वंटावारुपु (लोग सार्वजनिक सड़कों पर आकर भोजन तैयार करते हैं और सड़कों पर ही खाते हैं।) इसमें जाति या धर्म पर भेदभाव नहीं किया जाता है। यह एक सहपनक्ती भोजनालु (मिलकर भोजन करना) कार्यक्रम है। वे सड़कों पर बसों और अन्य वाहनों को रोक देते हैं। वंटावरुपु में विद्रोहियों द्वारा बनाया गया भोजन यात्रियों को खिलाया जाता है।

चित्र 21.5, 21.6 & 21.7 विरोध आंदोलन ने तेलंगाना जनता की अनोखी सांस्कृतिक पहचान और त्यौहारों पर बल दिया। विरोध के दौरान प्रदेश के गानों और नृत्यों का प्रदर्शन हुआ।

तेलंगाना का गठन हुआ। 9 दिसंबर 2009 के दिन संघीय गृह मंत्री ने घोषणा की कि - ''पृथक तेलंगाना राज्य के गठन की प्रक्रिया की शुरुआत होगी।'' चंद्रशेखर राव से अपना अनशन समाप्त कर दिया।

घोषणा की वापसी

आंध्र के राजनैतिक नेताओं के दबाव के फलस्वरूप 23 दिसंबर 2009 को घोषणा वापस ले ली गयी। तत्पश्चात् आंध्र प्रदेश के विकास की जानकारी प्राप्त कर उसकी रिर्पोट केंद्र को सौंपने के लिए न्यायमूर्ति श्री कृष्णा की अध्यक्षता में एक कमीशन का गठन किया गया। तेलंगाना की जनता को सदमा पहुँचा। चलिए हम घोषणा की वापसी के संभावित कारणों को देखेंगे।

हैदराबाद विकास का केन्द्र बन गया था। आर्थिक सुधारों की सफलता के साथ वैश्विक महत्व पर इसके दावे, दोनों के कारण यह शहर भारत की एक आवश्यकता बन गया था। सारे संसाधनों को यहाँ उपलब्ध करवाया गया जिसके कारण असंतुलित क्षेत्रीय विकास हुआ। विभिन्न भागों के अनेक लोगों ने हैदराबाद की संपत्तियों में निवेश किया। इनमें से अधिकांश लोगों ने रोज़गार और शिक्षा की खोज में हैदराबाद की ओर प्रवासन किया।

अन्य क्षेत्रों के निवेशक अपने भविष्य के लिए चिंतित थे। तटीय क्षेत्रों के किसान भी सिंचाई के लिए नहरों से जल की प्राप्ति और नियमित विद्युत आपूर्ति के लिए चिंतित थे। इनमें से

चित्र 21.8

चित्र 21.9

चित्र 21.8, 21.9: वंटावरुपु, गलियों में मिलकर भोजन बनाते हुए और मिलकर खाते हुए। ये चित्र नये राज्य के गठन की माँग के लिए लोगों की एकता को दर्शा रहे हैं।

सीमांध्र लोगों को लगा कि तेलुगु भाषा के द्वारा एकता में बंधे राज्य का, दो राज्यों में पृथक होना, दुर्भाग्यपूर्ण है। इन विरोधों ने, केंद्र सरकार पर तेलंगाना के लिए नये राज्य की घोषणा को वापस लेने के लिए दबाव डाला।

इसी बीच अधिकांश स्वायत्त और गैर-दलीय संगठनों ने, स्वतंत्र राज्य की माँग के लिए विविध जन सामान्य को प्रेरित करने के लिए अपनी गतिविधियाँ ज़ारी रखी। उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि नया राज्य तेलंगाना के सभी लोगों की रुचियों का प्रतिनिधित्व करेगा। इन सभी

चित्र 21.10 : घेरे को तोड़ते हुए आंदोलनकारी

चित्र 21.11 : मिलियन मार्च में हिस्सा लेते हुए आंदोलनकारी

ने समाज के विभिन्न वर्गों को आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इन संगठनों ने आकारहीन सामाजिक संगठनों को राजनैतिक आकार प्रदान किया तथा राजनैतिक आंदोलन और जन आंदोलन को शक्तिशाली बनाया। इन संगठनों ने तेलंगाना के लिए एक पूर्णकालिक संवर्ग (cadre) को प्रशिक्षित किया। इन कार्यकर्ताओं ने विभिन्न स्तरों पर आंदोलन का समन्वयन किया जिससे बड़ी संख्या में जनता और नेतृत्व को जोड़ने के लिए नये संगठनीय रूप उभरे।

सभी लोगों को एक करने के लिए सभी दलों और संगठनों में मिलकर तेलंगाना संयुक्त कार्यवाही समिति (TJAC) का गठन किया। इसके नेतृत्व में छह प्रमुख आंदोलनों जैसेः- असहयोग आंदोलन, मिलियन मार्च, सकल जनुल सम्मे, 42 दिनों की सामान्य हड़ताल, सागर हारम (हैदराबाद में हुसैनसागर के चारों ओर मानव श्रृंखला), संसद यात्रा (संसद तक यात्रा) और चलो असेंबली की शुरुआत की गयी।

तेलंगाना की प्राप्ति

केंद्र सरकार ने इस पृष्ठभूमि में दोनों क्षेत्रों के कांग्रेस नेताओं से परामर्श के प्रयास को ज़ारी रखा। राष्ट्रीय स्तर पर निर्णय लेने में दबाव उत्पन्न हो रहा था। तेलंगाना एक राष्ट्रीय मुद्दा बन

- सभी स्तरों पर अधिकांश संख्या में JAC’s और अन्य संगठनों का गठन हुआ। एक शिखरीय तेलंगाना संयुक्त कार्यवाही समिति का गठन क्यों आवश्यक था? अपने विचार बताइए। इसके गठन ने आंदोलन को किस प्रकार प्रभावित किया।
- कल्पना कीजिए कि आप तेलंगाना आंदोलन के कार्यकर्ता हैं। उस समय की अपनी भावनाओं का वर्णन करें जब केंद्र सरकार अलग राज्य करने की सहमती दी ।

चित्र 21.12 : हैदराबाद में टैंकबंड रोड पर एक रैली जिसे सागर हारम कहा गया।

गया था। कांग्रेस कोर समिति ने आंध्र और तेलंगाना, दोनों के प्रतिनिधित्व को सुना तथा अंत में विभाजन के पक्ष में निर्णय लिया। इसके अनुसार 18 फरवरी को लोक सभा में, 20 फरवरी को राज्य सभा में बिल पास हुआ और 1 मार्च 2014 को राष्ट्रपति के हस्ताक्षर हुए। संसद ने 2 जून 2014 को नियुक्ति दिवस के रूप में आंध्र प्रदेश राज्यका विभाजन किया। संसद में बी.जे.पी, बी.एस.पी., सी.पी.आई. और अन्य विपक्षी दलों ने बिल का समर्थन किया। लोगों ने उत्सव मनाया। प्रजातंत्र प्रक्रिया में निर्णय लेने में देर हो सकती है किंतु विरोधों के रूप में जन-संघर्ष के दुराग्रह ने देश को विश्वास दिलाया कि आंध्र प्रदेश से तेलंगाना को अलग करना चाहिए और लोगों ने विभिन्न स्थानों पर तेलंगाणा विजयोत्सवमुलु आरंभ किया। छात्र और अन्य कार्यकर्त्ता खुश हुए कि उनका सपना

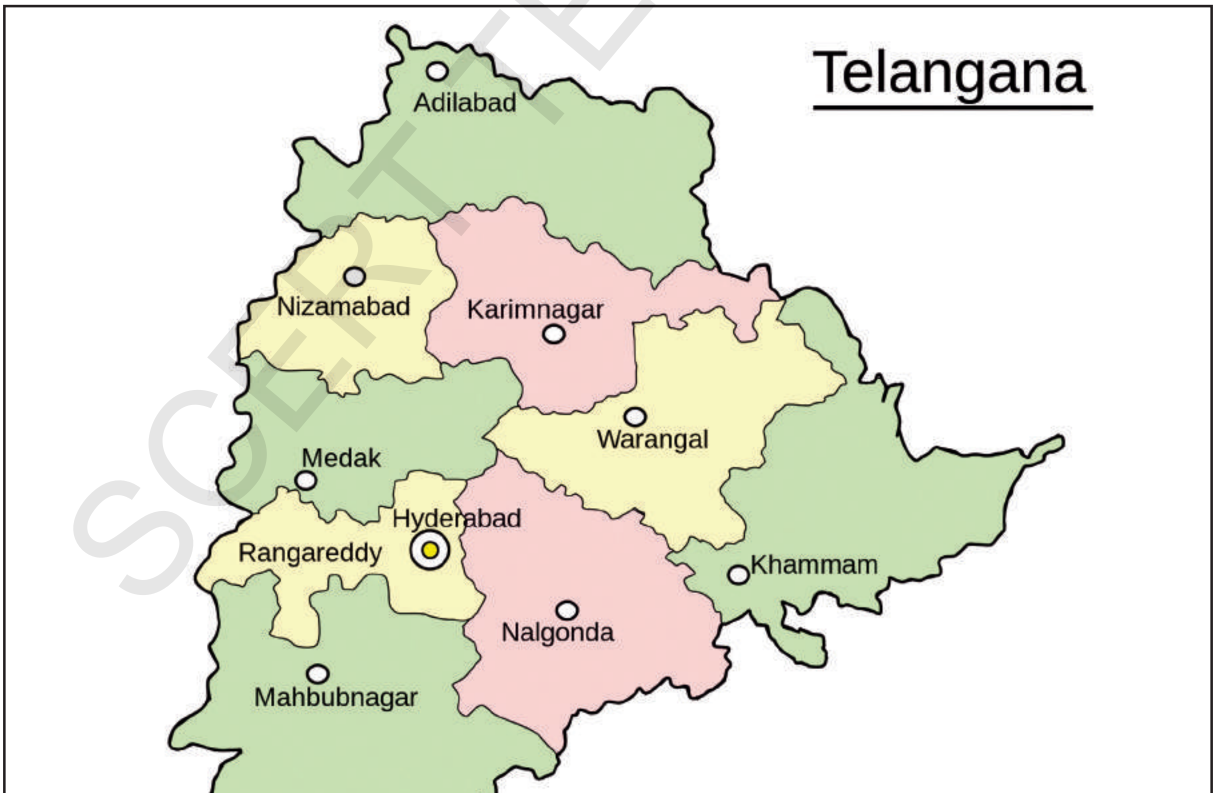

Map 3: Telangana formed on 2nd June 2014

SCERT TELANGANA

अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति कीजिए जब केंद्र सरकार ने पृथक राज्य के निर्माण की स्वीकृति दी थी।

- कल्पना कीजिए कि आप रायलसीमा के कर्मचारी है जो हैदराबाद में काम करते हैं। अपनी भावनाओं का वर्णन कीजिए।
- कल्पना कीजिए कि आप एक श्रमिक महिला है। अपने विचारों का वर्णन कीजिए।
- कल्पना कीजिए कि दिसंबर 2009 के समय आप आदिलाबाद जिले के जनजाति के सदस्य हैं। अपने मनोभावों का वर्णन कीजिए।

प्रोफेसर जयशंकर (तेलंगाणा के विचारक):

कोत्तपल्ली जयशंकर ने अपने छात्र जीवन से ही (1952) पृथक तेलंगाणा के लिए संघर्ष आरंभ किया। इनका जन्म 6 अगस्त 1934 में अक्कमपेट गाँव के आत्मकूर मंडल के वरंगल रूरल जिले में हुआ था। उनकी माता का नाम महालक्ष्मी और पिता का नाम लक्ष्मीकांत राव है।

उन्होंने अपनी विद्यालयीन शिक्षा मरकाजी हाइस्कूल हनमकोंडा से तथा इंटरमीडियट व स्नातक की शिक्षा वरंगल से पूरी की है। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से इन्होंने अर्थशास्त्र में एम.ए. की पढ़ाई की। उस्मानिया विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

इन्होंने अपना व्यावसायिक जीवन एक अध्यापक के रूप में आरंभ किया। तत्पश्चात वरंगल के चंदा कांतय्या मेमोरियल कॉलेज (सी.के.एम.कॉलेज) में प्रधानाध्यापक के रूप में, काकतीय विश्वविद्यालय और सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंग्लिश एंड फॉरेन लैंग्वेज (वर्तमान में EFLU) के रजिस्ट्रार के रूप में तथा काकतीय विश्वविद्यालय के उपकुलपति के रूप में कार्य किया।

पृथक तेलंगाणा के कट्टर समर्थक होने के कारण प्रोफेसर जयशंकर ने कई आंदोलनों में भाग लिया। 1952 में फजल अली की अध्यक्षता में राज्य पुनर्गठन आयोग राज्यों और पुनर्गठन के संबंध में जनमत लेने के लिए हैदराबाद पहुँचा। कमीशन को रिपोर्ट प्रस्तुत करने वाले छात्र संगठनों में प्रो. जयशंकर प्रमुख थे।

SCERT TELANGANA

प्रस्तुत की गयी रिपोर्ट के अध्ययन के पश्चात आयोग ने प्रश्न किया ''क्या तेलंगाणा एक पृथक राज्य के रूप में जीवित रह सकता है?'' इस प्रश्न के लिए उन्होंने एक छात्र नेता के रूप में निडरता से उत्तर दिया ''आँध्र के लोगों के साथ रहने की अपेक्षा हम जीवित रहने के लिए भीख माँग लेंगे। 1969 के तेलंगाणा आंदोलन को सुदृढ़ करने का इनका प्रयास प्रशंसनीय है। उन्होंने इस विचारधारा का प्रचार किया कि आँध्र लोगों के आधिपत्य के कारण तेलंगाणा के लोग शैक्षिक, रोजगार और सांस्कृतिक क्षेत्रों में ही नहीं बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी विषमताओं का सामना करते हैं।

1996 में आरंभ में तेलंगाणा आंदोलन के अगले चरण के ये विचार थे। इन्होंने जन माध्यमों के द्वारा सांख्यिकी (Statistics) के साथ तेलंगाणा लोगों के द्वारा सामना की जाने वाली विषमताओं पर प्रकाश डाला।

इनकी इच्छा थी कि तेलंगाणा आंदोलन तीन चरणओं में चलाया जाय। इसमें से पहली चरण तेलंगाणा के सिद्धांतों का प्रचार, दूसरा विभिन्न रूपों में गतिविधियाँ व यूरोप तथा अंतिम चरण राजनैतिक प्रक्रिया का था। तेलंगाणा की प्राप्ति तक विचारधाराओं के प्रसार के लिए किये गये उनके प्रयास अद्भुत थे। उनकी विचारधारा से प्रभावित होकर छात्र संगठनों, मंडलियों, राजनैतिक दलों और संयुक्त कार्यवाही समिति (JAC) ने तीव्र विरोध किया, जिससे तेलंगाणा आंदोलन को गति मिली। फल स्वरूप 2 जून 2014 के दिन तेलंगाणा राज्य का गठन हुआ। इन्होंने प्रामाणिक रूप से घोषणा कि ''मैंने तेलंगाणा का गठन देखा है।'' दुर्भाग्यवश पृथक तेलंगाणा गठन के सपने के साकार होने के पूर्व ही 21 जून 2011 के दिन बीमारी के कारण इनकी मृत्यु हो गयी।

प्रो. जयशंकर की स्मृति में तेलंगाणा राज्य की सरकार ने तेलंगाणा के कृषि विश्वविद्यालय का नाम बदलकर प्रोफेसर जयशंकर कृषि विश्वविद्यालय रख दिया और तेलंगाणा के नवगठित जिलों में से एक जिले का नाम जयशंकर रखा।

मुख्य शब्द

रज़ाकार	क्षेत्रीय परिषद	पुलिस कार्रवाई
मुल्की नियम	सीमान्ध्रा	सकल फसल क्षेत्र

अपनी सीखने की क्षमता सुधारें

1) गलत कथनों को सही कीजिए। (AS_1)
   - भारतीय राज्य भाषाओं के आधार पर बने हैं।
   - राज्य में निवास करने वाले सभी विभिन्न समूहों के लोगों की भाषा को पर्याप्त पहचान उपलब्ध करवायी गयी है।
2) ''तेलंगाना में निवास करने वाली जनता की विविधता का एक ऐतिहासिक सामाजिक और सांस्कृतिक प्रकरण है।'' अध्याय में दिये गये तर्कों के आधार पर इस कथन को सिद्ध कीजिए।(AS_2)
3) जैंटलमैन समझौते की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए। क्षेत्रों के बीच यह अविश्वास का कारण कैसे बना?(AS_1)
4) तेलंगाना के लोगों की आकांक्षाओं के आधार पर बताइए कि प्रदेश में रहने वाले सभी वर्गों के लोगों की प्रतिष्ठा की सुनिश्चिता के लिए आप कौन से कदम उठायेंगे?(AS_4)
5) दोनों प्रदेशों में जल, कृषि, शिक्षा और रोज़गार की सुलभता में क्या अंतर थे?(AS_1)
6) शहरी, ग्रामीण प्रांतों के विकास में असमानताओं के कारण सरकार से जो अपेक्षाएँ है उनमें अन्तर्विरोध कैसे उत्पन्न हुआ है?(AS_1)
7) उन लोगों के द्वारा दिये गये तर्क क्या थे ये जो दोनों प्रदेशों को एकीकृत रखना चाहते थे?(AS_1)
8) तेलंगाना राज्य गठन के लिए प्रयोग में लाये गये विभिन्न जन चेतना माध्यमों का मूल्यांकन आप कैसे करेंगे?(AS_1)
9) तेलंगाना राज्य के गठन में जे.ए.सी. और राजनैतिक दलों द्वारा निभायी गयी विभिन्न भूमिकाओं का वर्णन कीजिए? जे.ए.सी. ने राजनैतिक आदर्शों के लिए किस प्रकार एक मंच तैयार किया था? अपने विचार बताइए। (AS_2)
10) तेलंगाना के मानचित्र में निम्नलिखित को दर्शाइए। (AS_5)

1) महबूबनगर	2) खम्मम	3) निज़ामाबाद	4) आदिलाबाद	5) नलगोंडा
6) महबूबाबाद	7) निर्मल	8) जोगुलंबा		

परियोजना कार्य

2009 के दौरान आंदोलन में भाग लेने वाले लोगों का साक्षात्कार लीजिए। उनके अनुभवों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए और एक रिर्पोट तैयार कीजिए। इन घटनाओं से संबंधित छायाचित्र (photos) पुराने समाचार पत्रों और मैगनीज़ों से इकट्ठे कीजिए और एक स्क्रैप बुक तैयार कीजिए।

SCERT TELANGANA

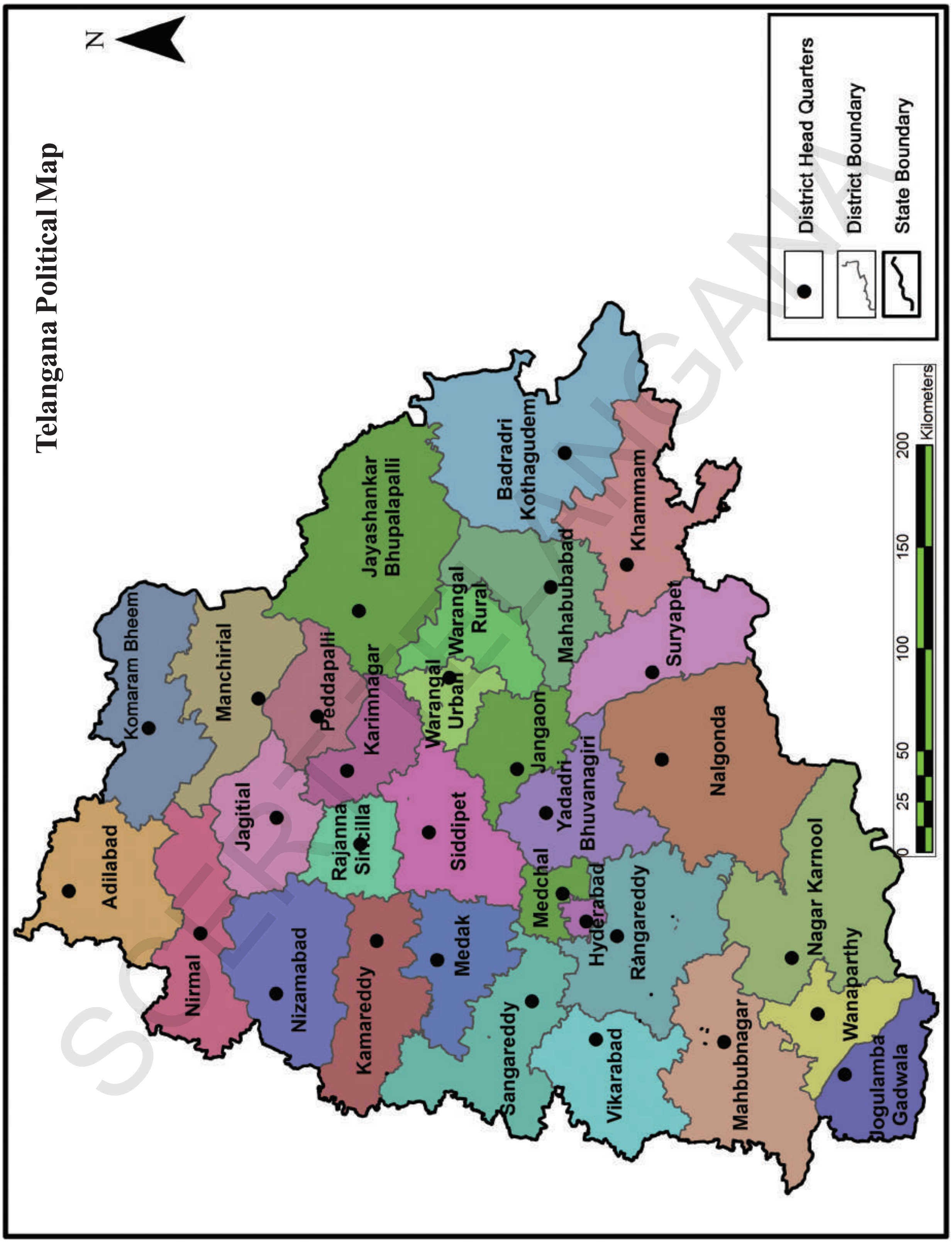
Telangana Political Map
N
Adilabad
Komaram Bheem
Manchirial
Nirmal
Nizamabad
Jagitial
Peddapalli
Jayashankar Bhupalapalli
Karimnagar
Rajanna Sircilla
Kamareddy
Medak
Siddipet
Warangal Urban
Warangal Rural
Mahabubabad
Badradri Kothagudem
Khammam
Jangaon
Yadadri Bhuvanagiri
Suryapet
Nalgonda
Medchal
Hyderabad
Sangareddy
Rangareddy
Vikarabad
Mahbubnagar
Nagar Karnool
Wanaparthy
Jogulamba Gadwala
District Head Quarters
District Boundary
State Boundary
0 25 50 100 150 200
Kilometers

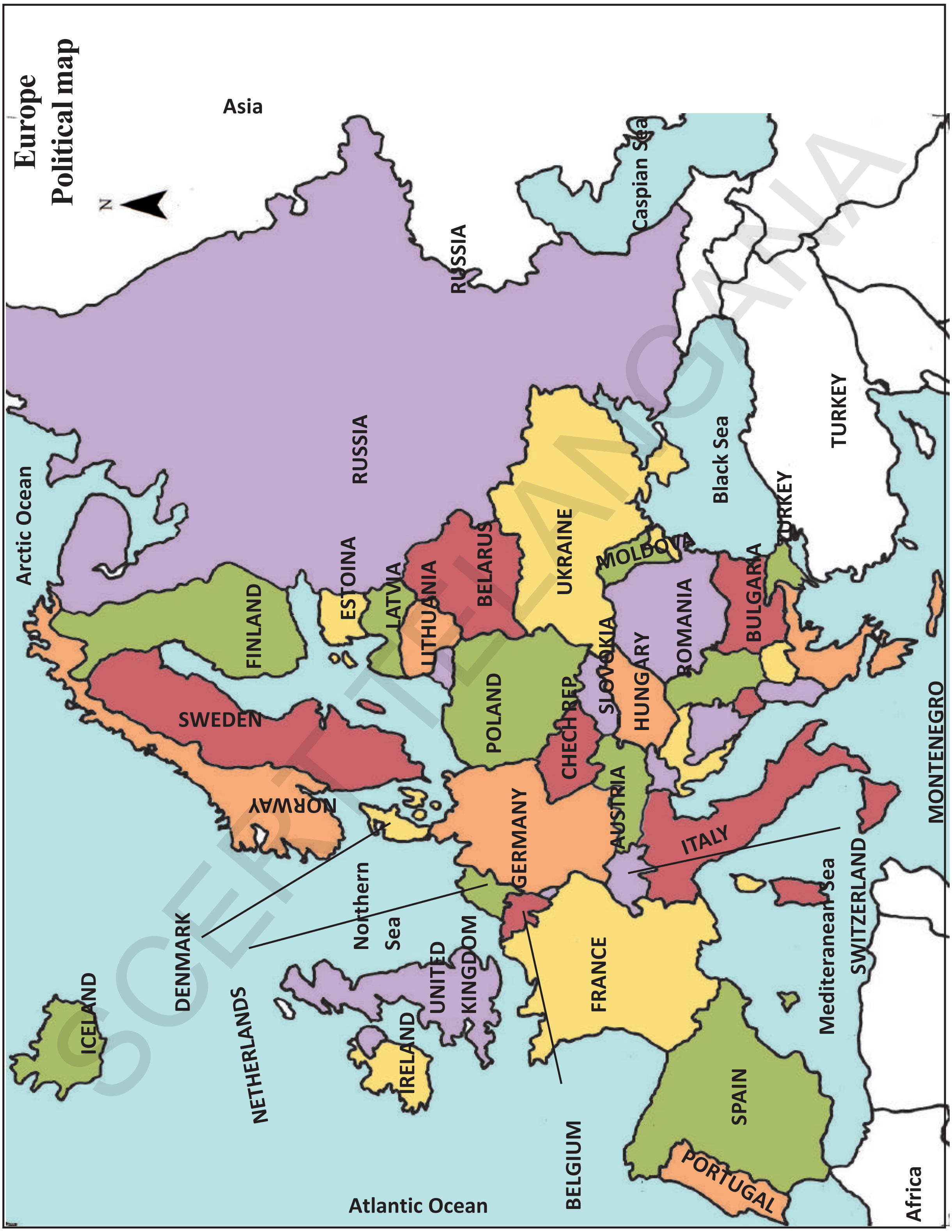

SCERT TELANGANA

SCERT TELANGANA

Africa Political Map

Africa Practice Map

SCERT TELANGANA

World Political Map

SCERT TELANGANA

World Outline Map

SCERT TELANGANA

India Political Map

India Practice Map

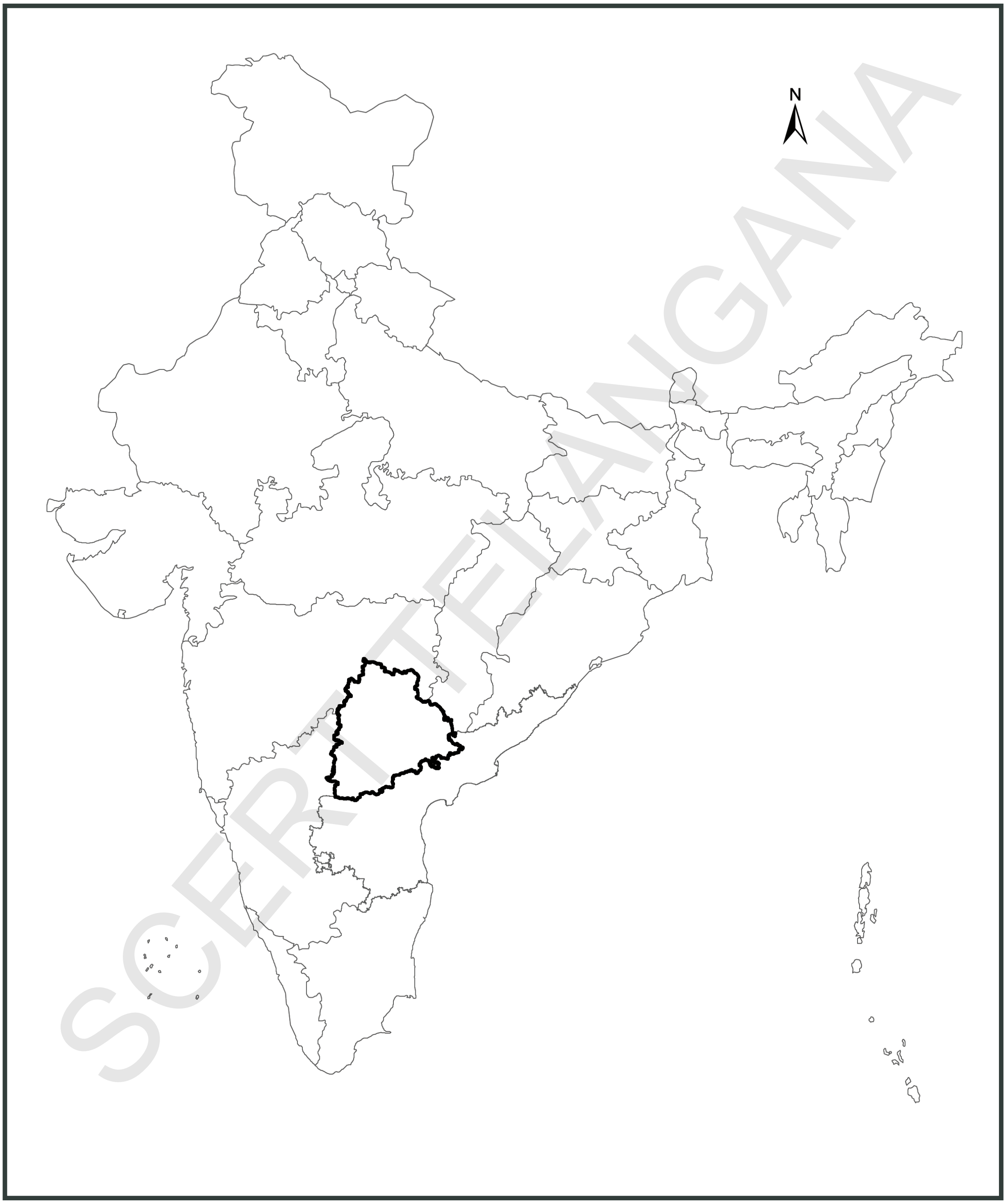

SCERT TELANGANA

India Physical Map